TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

# लोक पहल

स्वामी शुकदेवानन्द के निर्वाण दिवस पर विशेष-पेज-2

शाहजहाँपुर, शुक्रवार 07 जुलाई 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2, अंक :19 पृष्ठ :8, मूल्य 2 रुपये

## माफिया की जमीन पर गरीब का 'आशियाना'

### योगी के फार्मूले से लोकसभा चुनाव में सियासी लाभ लेने की तैयारी में भाजपा

लोक पहल

**लखनऊ।** उप्र में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बुल्डोजर का भय गुण्डों और माफियाओं पर सिर चढ़कर बोल रहा है। प्रदेश में गुण्डों और भूमाफियाओं ने तमाम जमीनों पर अवैध कब्जे कर रखे हैं उनमें से तमाम पर योगी के बुल्डोजर ने निर्माण गिराकर तहस नहस कर दिया लेकिन योगी सरकार यहीं पर नहीं रुकी, गुण्डों और माफियाओं से छुड़ाई गई जमीनों पर सरकार ने फ्लैट बनाकर गरीबों को देने की योजना शुरू की है। योगी सरकार की योजना काफी हिट होती नजर आ रही है। उत्तर प्रदेश में प्रयागराज पहला ऐसा शहर है, जहां अतीक अहमद से छुड़ाई गई सरकारी जमीन पर 76 फ्लैट बनाकर योगी सरकार ने गरीबों में बांट दिए। मुख्यमंत्री योगी का यह फॉर्मूला अब सियासी रूप में भी हिट होता नजर आ रहा है और जल्द ही पूरे उत्तर प्रदेश में बुलडोजर चलाकर माफियाओं से छुड़ाई गई सरकारी जमीनों पर अब गरीबों के आशियाने नजर आएंगे।

30 जून को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज में जब फ्लैट की चाबियां गरीब परिवारों को सौंपी तो उन्होंने इस बात का ऐलान कर दिया था कि अब प्रयागराज का यह मॉडल उत्तर प्रदेश के दूसरे जिलों में भी जाएगा। जहां–जहां माफियाओं ने सरकारी जमीनों को कब्जा किया है और सरकार ने जहां बुलडोजर चलाकर उसे छुड़ाया है, उन सभी जमीनों पर गरीबों के लिए फ्लैट बनाए जाएंगे। अब सरकार की अगली तैयारी लखनऊ और मऊ में मुख्तार अंसारी और उसके परिवार से छुड़ाई गई सरकारी जमीनों पर गरीबों के लिए आशियाने बनाने की है। जिस तेजी से माफिया के अवैध अतिक्रमण पर बुलडोजर चले, अब योगी सरकार उसी तेजी से उन जमीनों पर गरीबों के आशियाने बनाने की तैयारी कर रही है। बता दें कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का यह मॉडल अब सुर्खियों में है। अगले साल जब 2024 के लोकसभा चुनाव होंगे, तब तक कई जिलों में माफियाओं से छुड़ाई गई सरकारी जमीनों पर फ्लैट्स बनकर तैयार होंगे और हो सकता है, चुनाव के पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आयोजन कर गरीबों में माफियाओं के जमीनों पर बने फ्लैट की चाबियां सौंपें। माफिया से सरकारी जमीन छुड़वाकर उस पर गरीबों के लिए आशियाना बनवाना, योगी का यह प्रयागराज मॉडल 2024 से पहले चर्चा में आ गया है लेकिन अब यह देखना होगा कि इसका क्या सियासी फायदा होगा? भाजपा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मॉडल को भुनाने का प्रयास करने में जुट गई है। भाजपा इसे चुनाव में लोगों के सामने बेहद ही आक्रामक तरीके से रखने की तैयारी में है।

## आतंकवाद क्षेत्रीय एवं वैश्विक शांति के लिए खतरा : मोदी

### एससीओ की वर्चुअल समिट का आयोजन

**नई दिल्ली एजेंसी।** भारत की अध्यक्षता में शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन यानी एससीओ की वर्चुअल समिट आयोजित हुई है। इस बैठक में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ शामिल हुए हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बैठक के दौरान चरमपंथी गतिविधियों को लेकर चिंता जताई। पीएम मोदी ने कहा, 'आतंकवाद क्षेत्रीय एवं वैश्विक शांति के लिए प्रमुख खतरा बना हुआ है। इस चुनौती से निपटने के लिए निर्णायक कार्रवाई आवश्यक है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आतंकवाद चाहें किसी भी रूप में हो, किसी भी अभिव्यक्ति में हो, हमें इसके विरुद्ध मिलकर लड़ाई करनी होगी. कुछ देश, क्रॉस बॉर्डर टेररिज़्म को अपनी नीतियों के अंग के रूप में इस्तेमाल करते हैं. आतंकवादियों को पनाह देते हैं। एससीओ को ऐसे देशों की आलोचना में कोई संकोच नहीं करना चाहिए। ऐसे गंभीर विषय पर दोहरे मापदंड के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। टेरर फाइनेंसिंग से निपटने के लिए भी हमें आपसी सहयोग बढ़ाना चाहिए। इसमें एससीओ के आरएटीएस मैकेनिज्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. हमारे देशों के युवाओं के बीच चरमपंथ के फैलाव को रोकने के लिए भी हमें और सक्रिय रूप से कदम उठाने चाहिए।"

अफगानिस्तान की स्थिति को लेकर पीएम मोदी ने कहा, "अफगानिस्तान की स्थिति का हम सभी की सुरक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ा है।

विवादों, तनावों और महामारी से घिरे विश्व में फूड, फ्यूल और फर्टिलाइजर क्राइसिस सभी देशों के लिए एक बड़ी चुनौती है। एससीओ के अंतर्गत भाषा सम्बन्धी बाधाओं को हटाने के लिए हमें भारत के एआई आधारित लैंग्वेज प्लेटफॉर्म 'भाषिणी' को सभी के साथ साझा करने में खुशी होगी। यह समावेशी प्रगति के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी का एक उदाहरण बन सकता है। आज ईरान एससीओ परिवार में एक नए सदस्य के रूप में जुड़ने जा रहा है. इसके लिए मैं राष्ट्रपति रायसी और ईरान के लोगों को बहुत बहुत शुभकामनायें देता हूँ। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने इस बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि बीजिंग किसी भी तरह के संरक्षणवाद और एकतरफा प्रतिबंधों का विरोध करेगा।

## गैरों पे करम–अपनों पे सितम

### भाजपा ने संगठन में किया बड़ा फेरबदल, चार नए प्रदेश अध्यक्षों में तीन बाहरी

लोक पहल

**नई दिल्ली।** लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुटी भाजपा जहां एक ओर संगठन में फेरबदल करके अपनी सियासी जमीन को मजबूत कर रही है। वहीं दूसरी ओर आने वाले समय में मंत्रिमण्डल में भी फेरबदल संभव है। भाजपा ने संगठन में बड़े बदलाव करते हुए केंद्रीय मंत्री जी. किशन रेड्डी तेलंगाना के प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं। एनटीआर की बेटी और टीडीपी अध्यक्ष चंद्रबाबू नायडू की रिश्तेदार डी. पुरंदेश्वरी को आंध्र प्रदेश का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। इसके साथ ही झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी झारखंड और सुनील जाखड़ पंजाब के प्रदेश अध्यक्ष बनाए गए हैं। भाजपा ने कैडर से जुड़े कार्यकर्ताओं को दरकिनार करते हुए, गैरों पे करम, अपनों पे सितम' की तर्ज पर तीन नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष ऐसे बनाए हैं जो पहले से किसी और दल में थे और बाद में भाजपा में शामिल हुए। बात यदि पंजाब की जाए तो पंजाब के नए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सुनील जाखड़ महज साढ़े 13 महीने पहले भाजपा में आए हैं। सुनील जाखड़ के परिवार का कांग्रेस से 50 साल लंबा साथ था। खुद जाखड़ 2017 से 2021 तक पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके हैं। जाखड़ 2012–2017 तक कांग्रेस नेता के तौर पर पंजाब विधानसभा में विपक्ष के नेता भी रहे हैं। जाखड़ साल 2002 में अबोहर विधानसभा सीट से कांग्रेस के टिकट पर पहली बार विधायक चुने गए। वह 2002–2017 तक अबोहर सीट से लगातार तीन बार विधायक रह चुके हैं। गुरदासपुर लोकसभा सीट पर उप–चुनाव में सुनील जाखड़ ने कांग्रेस के टिकट पर जीते थे। सुनील जाखड़ के पिता डॉ. बलराम जाखड़ कांग्रेस के वरिष्ठ नेता थे। वह 10 साल तक लोकसभा अध्यक्ष भी रहे थे। बलराम जाखड़ को मध्य प्रदेश का राज्यपाल भी बनाया गया था। सुनील जाखड़ के भतीजे संदीप जाखड़ अभी भी कांग्रेस विधायक हैं।

भाजपा ने डी. पुरंदेश्वरी को आंध्र प्रदेश भाजपा का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। पुरंदेश्वरी नौ साल पहले भाजपा में आई थीं। पुरंदेश्वरी आन्ध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और तेलुगु देशम पार्टी के संस्थापक एन टी रमाराव की बेटी हैं। पुरंदेश्वरी 2009 में कांग्रेस के टिकट पर विशाखापट्टनम लोकसभा सीट से सांसद निर्वाचित हुईं थीं। वह मनमोहन सरकार में राज्य मंत्री भी रहीं। हालांकि, 2014 के लोकसभा चुनाव से पहले उन्होंने भाजपा का दामन थाम लिया था। 2014 में उन्होंने राजमपेट से बीजेपी के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा लेकिन चुनाव हार गईं। झारखंड के पहले मुख्यमंत्री रहे बाबूलाल मरांडी को प्रदेश का नया भाजपा अध्यक्ष बनाया गया है। मरांडी ने 2020 में अपनी पार्टी झारखंड विकास मोर्चा का विलय भाजपा में कर दिया था। मरांडी ने 2006 में भाजपा छोड़कर अपनी पार्टी बनाई थी। भाजपा ने चार नए प्रदेश अध्यक्षों में जी. किशन रेड्डी इकलौते ऐसे नेता हैं जिनका पूरा करियर भाजपा का रहा है। मोदी सरकार में गृह राज्य मंत्री की जिम्मेदारी संभाल रहे जी. किशन रेड्डी तेलंगाना ने अपना सियासी सफर 1977 में जनता पार्टी के युवा नेता के रूप में शुरू किया। 1980 में भाजपा के गठन के बाद वह पूर्णकालिक रूप से पार्टी में शामिल हो गये।

उन्होंने आंध्र प्रदेश की भारतीय जनता युवा मोर्चा और भारतीय जनता पार्टी की इकाइयों में विभिन्न पदों पर काम किया है। रेड्डी 2002 में भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। 2004 में पहली बार भाजपा के टिकट पर विधायक चुने गए। रेड्डी हिमायतनगर विधानसभा सीट से विधायक के रूप में चुने गए थे और 2009 और 2014 में अंबरपेट विधानसभा क्षेत्र से दोबारा चुनाव जीतकर आए। 2010 से 2014 तक वह आंध्र प्रदेश के बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष रहे। इसके बाद 2014 से 2016 तक, वह तेलंगाना के भाजपा राज्य अध्यक्ष रहे। 2019 से वह पहली बार तेलंगाना की सिकंदराबाद सीट से लोकसभा सांसद चुने गए। इसके बाद उन्हें केंद्र की मोदी सरकार में गृह राज्य मंत्री की जिम्मेदारी दी गई। कभी तेलंगाना की केसीआर सरकार में मंत्री रहे ई. राजेंद्र को भाजपा की चुनाव प्रबंधन कमेटी का प्रमुख बनाया गया है। राजेंद्र ने जून 2021 में भाजपा का दामन थामा था। आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री किरन कुमार रेड्डी को भी पार्टी ने अहम जिम्मेदारी दी है। रेड्डी ने बीते अप्रैल में ही भाजपा का दामन थामा है। पार्टी ने उन्हें भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति का सदस्य बनाया है।

# युगावतार, संत शिरोमणि, ब्रह्मनिष्ठ स्वामी शुकदेवानन्द

डा प्रशांत अग्निहोत्री

भारत वर्ष प्राचीन काल से ही विश्व गुरु की उपाधि से विभूषित रहा है। इस देश में सन्तों की एक महान परम्परा रही है। उन्होंने न केवल विश्व को महान आध्यात्मिक संदेश दिया वरन् मानव को मानवीयता का संदेश भी दिया। सर्वान्तर्यामी भगवान के मित्यावतार संत–महापुरुषों का जीवन दर्शन श्रद्धालु भक्तों की आध्यात्मिक प्रेरणा का अनादिकाल से मंगलमय श्रोत रहा है। ऐसे ही एक देशबंधु महापुरूष युवा अवतार संत शिरोमणि, ब्रहमनिष्ठ स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज इसी महान सन्त परम्परा के वाहक थे। उनके तपःपूत जीवन की असंख्य घटनाओं, देश एवं धार्मिक जगत की अविस्मरणीय सेवाओं एवं उनकी रहनी, करनी और कथनी के समन्वय का जो व्यवहारिक रूप लाखों व्यक्तियों में देखा सुना है वह एक ऐसे अथाह महासागर की भांति है जिसका पार पाना यद्यपि असंभव जैसा ही है स्वामी जी केवल दार्शनिक विचारक ही नहीं थे वरन् उनके स्फुट विचार एवं कार्य उन्हें शिक्षा शास्त्री और समाज सुधारक के रूप में स्थापित करते है। मूर्धन्य संत, युगावतार, दार्शनिक महापुरुष स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज का जन्म कन्नौज नगर के निकट मियागंज नामक ग्राम में हुआ था। धर्मपरायण माता शीतलादेवी एवं धन कुबेर जगन्नाथ साहू के संस्कार प्रारंभ से ही स्वामी जी पर पड़े। स्वामी शुकदेवानन्द जी का जन्म 1902 को हुआ था। बच्चे में वैरागी भावना देखकर घर वालों ने सोचा कि कहीं यह साधु न हो जाए, ये साधु हो गया तब अपने घर की अपकीर्ति होगी। घरवालों ने विचार किया कि बहुत जल्द प्रयत्न करके इसका विवाह कर देना चाहिए, अन्ततः चौदह वर्ष की ही आयु में आपका विवाह मियागंज के निकट तिरवा के निवासी एक सम्पन्न वैश्य कुल में सम्पन्न हुआ। इसके बाद आपने जीविकोपार्जन के लिए दुकान खोली। दुकान खोलते समय आपने निश्चय कर लिया कि झूठ नहीं बोलूंगा, चाहे सौदा बिके या नहीं।

आपने अपने भाई रूप नारायण के साथ कन्नौज में कपड़े की दुकान खोली कुछ समय दुकान बंद कर दी गयी। आप कानपुर जाकर किराने का व्यवसाय करने लगे, थोड़े ही समय में व्यवसाय में पारंगत हो गये लेकिन पिता श्री जगन्नाथ प्रसाद साहू जी का स्वर्गवास हो गया, इससे आपको अत्याधिक दुःख पहुंचा और विचारमग्न रहने लगे। इसी चिन्तन अवस्था में उन्हें लगा कि शायद उन्हें आध्यात्मिक शांति के शिखर की तलाश है। आपके मस्तिष्क में गुरु की प्राप्ति का विचार आया और यह विचार साकार हुआ। ब्रह्मलीन परिव्राजकाचार्य श्री 108 श्री स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज गुरु के रूप में मिल गए।

मियागंज कन्नौज में स्वामी जी का पैतृक आवास व जन्मस्थान

संसार के प्रति उदासीनता एवं सत्संग के प्रति राग में आपकी तीव्रता इतनी बढ़ गयी कि संसार के समस्त पदार्थ नीरस लगने लगे। संयोगवश कुछ समय उपरान्त यह स्थिति स्वयं ही उत्पन्न हो गयी, आपकी पत्नी के देहावसान के बाद आपने घर को त्याग दिया। शमशान घाट–मेंहदी घाट के श्री हाथी राम बाबा का निवास स्थान था। समय के प्रवाह में यह स्थान टीला बन गया। गृह त्यागने के पश्चात सर्वप्रथम आपका आगमन यहीं पर हुआ और इस टीले को खत्म कर वैकुण्ठाश्रम की स्थापना की। युगावतार परम् सदगुरुदेव श्री स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज उन दिनों वैरी आश्रम में निवास करते थे वे किसी शिष्य या सेवक को अपने पास नहीं रखते थे। आपने

गुरुदेव से विनम्र निवेदन किया तब गुरु जी ने 13 नियमों की प्रतिज्ञा कराते हुए स्वीकृति दी। आपने तीन वर्ष तक गुरु जी द्वारा बताए गए तेरहों नियमों का पालन करते हुए गुय जी की अदभुत सेवा की। वैरी आश्रम में तीन वर्ष तक रहने के पश्चात आपने सत्संग प्रचार के लिए भ्रमण किया। भ्रमण काल में मैनपुरी, फरुर्खाबाद, शाहजहाँपुर, बरेली, दिल्ली, मुम्बई, आदि–आदि स्थानों पर पहुंचे। स्वामी जी शाहजहॉपुर में प्रथम बार ब्रह्मालीन, सदगुरू पूज्य श्री स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज के साथ सन् 1931 में पधारे। उस समय आप तिकुनिया बाग (मुमुक्ष–आश्रम) में ठहरें, यहां का दृश्य भयानक था। श्री विशनचन्द्र सेठ के पिता स्वर्गीय श्री काली चरन सेठ की श्रद्धा भावना और विशेष आग्रह पर इसी स्थान पर आश्रम का शिलान्यास किया। सर्वप्रथम शाहजहॉपुर में आपको लाने का श्रेय डा0 सुदामा प्रसाद जी (स्वामी सद्गुणानंद जी महाराज) को है। सबसे पहले स्वामी जी ने शांति कुटी में निवास किया। स्वामी जी के पास सत्संग के लिए आने वाले लोगों से उस समय गर्रा पुल पर टैक्स लिया जाता है, जिससे स्वामी जी बहुत चिंतित थे। यह चिंता जानकर दिलावरगंज के सठ सरजू प्रसाद गुप्ता ने स्वामी जी की स्वीकृति से रोजा में अपने बाग में कुटी बनवाई, जिसका नामकरण एवं उदघाटन स्वामी जी के द्वारा हुआ। लोगों की असुविधा (रोज आने–जाने की) को देखकर स्वामी जी ने सिविल लाइंस स्थित लाला श्रीराम खजांची के बाग में राउटिया लगा कर ही सत्संग व्यवस्था की, यहां पर आपकी स्वीकृति से लाला केदारनाथ जी टंडन ने एक कुटिया का निर्माण कराया जो कि आज सिविल लाइंस आश्रम के नाम से जानी जाती है। इन्हीं विचारों की महिमा से सन् 1942 के सक्रांति काल में जब देश में सर्वत्र

स्वामी शुकदेवानन्द जी की कपड़े की दुकान

क्रांती की ज्वाला धधक रही थी तब आपने शाहजहॉपुर के भक्तों के विध्वंसक कार्यो से रोककर राष्ट्र के भावी कणधारों का निर्माण करने की प्रेरणा दी तथा ''ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय'' की स्थापना मुमुक्षु आरम में केवल तीन छात्रों से हुई। साथ ही मुमुक्षु आश्रम में 'श्री देवी सम्पद् इण्टर कालेज' बाल विद्या मन्दिर की स्थापना हुई। डिग्री कालेज की आवश्यकता को देखकर फरवरी 1964 में विशिष्ट नागरिकों की मीटिंग बुलाकर डिग्री कालेज खोलने की बात कही, जिसका सभी नागरिकों ने एक मत से समर्थन किया और शिवशंकर वर्मा (प्रिंसिपल, बी0एन0 एस0डी0 कालेज कानपुर) ने कालेज की समस्त रूप रेखा तैयार की।

पांच मार्च से नौ मार्च (1964) तक मुमुक्षु आश्रम में विशाल महोत्सव हुआ जिसमें सहस्त्रों की संख्या में लोग देश के कोने–कोने से आए और आठ मार्च 1964 को माननीय गृहमंत्री गुलजारी लाल नन्दा द्वारा 'स्वामी शुकदेवानन्द डिग्री कालेज' का शिलान्यास किया गया। कालेज निर्माण के लिए जनता में विशेष उत्साह था, निश्चित तिथि पर पैनल इंस्पेक्शन के तीन विद्वान आगरा यूनिवर्सिटी से पधारे और सुन्दर वातावरण में कालेज की उपयोगिता देखकर अपनी स्वीकृति देने के साथ–साथ यूनिवर्सिटी की भी स्वीकृति प्राप्त हो गई। 04 जुलाई को अध्यापकों की नियुक्ति एवं 15 जुलाई 1964 को विधिवत सत्र प्रारम्भ हुआ।

स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज के अद्भुत आकर्षण, अलौकिक प्रभाव, हृदयस्पर्शी उपदेश, प्रेम परिपूरित व्यवहार कुशलता, गंगा प्रभावत अकथनीय कर्मठता आदि ऐसे गुण हैं जिनकी समता अन्यत्र नहीं मिलती है। उनका समस्त जीवन त्याग, वैराग, परोपकार, निर्मल प्रेम और आध्यात्मिक जगत की आविस्मरणीय सेवाओं के लिए अथक परिश्रम आदि की गौरवमयी गाथा है। स्वामी शुकदेवानन्द जी कीर्ति पताका देश में ही नहीं विदेशों में भी फैला रही है। 18 जुलाई को प्रातः 8.15 बजे संत शिरोमणि स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज अपने सहस्त्रों शिष्यों को रोता विलखता छोड़कर पुण्यसलिला भगवती गंगा के पावन तटवर्ती सुरम्य परमार्थ निकेतन में ब्रह्मलीन हो गये। ब्रह्मलीन स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज द्वारा लोक कल्याण के लिए किये गये कार्य उनकी यशगंध से इस संसार को सुवासित करते रहेंगे।

## स्वामी शुकदेवानन्द जी को काव्यात्मक श्रद्धांजलि

**हे सन्त श्रेष्ठ ! शतशः प्रणाम।**

हे सन्तश्रेष्ठ निस्पृह अकाम!
काटता निखिल भव के बन्धन हे तपः पूत तव पुण्य नाम।
स्वामी शुकदेवानन्द वंद्य आलोक–पुंज भू के अमन्द।
शुचि दिव्य रूप, सद्गुण प्रभूत, संयत स्वरूप आनन्द–कंद।
जग–मोह–तमिस्रा–तमस मध्य देदीप्य ज्ञान–रवि तेज–पुंज।
दुःख–ताप–तप्त जग–जीवन हित सुख–शान्ति–विनिर्मित सघन कुंज।
युग के गौरव गिरि सुदृढ़, अचल नभ उन्नत उज्ज्वल कीर्ति भाल।
सत्कर्म–स्रोत प्रस्फुटित तरल सिंचित करता वसुधा विशाल।
हे ब्रह्मनिष्ठ, सत् समाविष्ट, उपदेशामृतमय चारु चन्द।
आलोक अक्षरों से अंकित भू पर तव यश–गाथा अमन्द।
औदार्य अमित करुणा–रंजित व्यंजित वसुधा पर दिव्य धाम।
**हे सन्तश्रेष्ठ! शतशः प्रणाम।**

**–डॉ. गिरिजानन्दन त्रिगुणायत 'आकुल'**

**नमोऽस्तु ते साधु शुकदेव–स्वामिन्!**

श्री मन्तः परमाः सन्तः, महामण्डलमण्डिताः।
शुकदेवाः सुखदेवाः, महादेवाः महोज्जवलाः।।
करुणा–वरूणागाराः, सर्वभूत हिते रताः।
दैवी सम्पद्मण्डलेशाः, भक्तमण्डल पूजिताः।।
नमोऽस्तु ते साधु–समाजबन्धो!
आनन्द–सिन्धो ! शुकदेव–स्वामिन!
भजनान् सदाधर्मनिजांश्चपाहि,
प्रपाहि सर्वान् नतमस्तकान् नः ।।

**–आचार्य पं. गया प्रसाद त्रिपाठी**

## A Sonnet On Swami Shukdevanand ji

Our heads bow low in founder's memory,
for his country's welfare, he laboured well,
Raised this temple of Shining glory,
Ignorance, illiteracy to dispel.
Ashram he built to teach spirituality,
College to reaise a new generation,
Goodness he bstowed with unpartiality,
His greatness is on the lips of everyone.
Sacrificed his all to raise this college,
Made this Ashram a well-known name,
Opened the way to health, wealth and knowledge,
Can sons of this soil ever forget his name.
Arise and uplift College, O noble Soul,
Re-inspire this holy Ashram as a whole.

**-Prof. H.N. Tayal**

## अपने शिष्य प्यारे लाल को स्वामी शुकदेवानन्द जी द्वारा लिखा गया पत्र

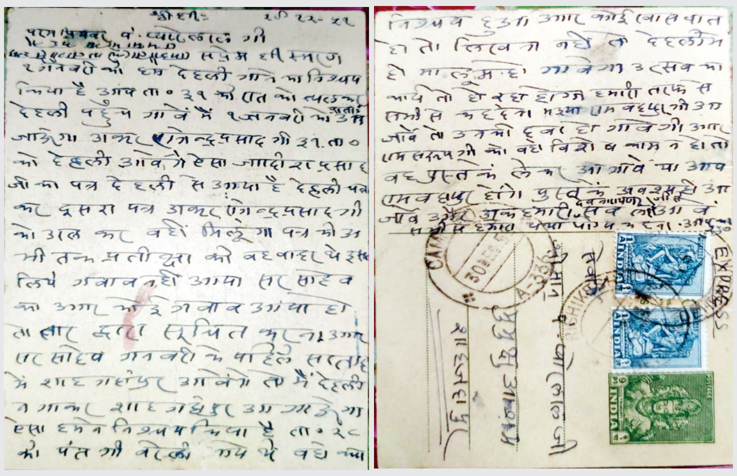

# प्रखर संत और समाजसेवी महामंडलेश्वर स्वामी हरिहरानंद सरस्वती

दैवी संपद महामंडल के अध्यक्ष और महामंडलेश्वर स्वामी हरिहरानंद जी महाराज की देखरेख में स्वामी एकरसानन्द आश्रम मैनपुरी में विभिन्न सामाजिक गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। जिसके तहत संसारपुर में आश्रम की ओर से गौसेवा, वृक्षारोपण व अन्य गतिविधियां संचालित की जा रही है। इसके अतिरिक्त स्वामी हरिहरानंद जी महाराज की देखरेख में छत्तीसगढ़ के केंदई, कोरवा में स्वामी भजनानंद बनवासी सेवा आश्रम, रेनकूट सोनभद्र में स्वामी शुकदेवानन्द आश्रम, ओबरा सोनभद्र में गीता मन्दिर, झूसी इलाहाबाद में स्वामी भजनानंद मृत्युंजय धाम, फिरोजाबाद में श्री गोपाल आश्रम चैरिटेबिल ट्रस्ट, कटघोरा कोरवा छत्तीसगढ़ में स्वामी भजनानंद शांति निकेतन, जगन्नाथपुरी उड़ीसा में स्वामी भजनानंद मृत्युंजय मठ, राजिम रायपुर में ब्रह्मचर्य आश्रम, बदायूं में सरला परमार्थ ट्रस्ट आश्रम, पिहोबा कुरुक्षेत्र में स्वामी भजनानंद आश्रम व झारसूगड़ा उड़ीसा में हरिओम आश्रम तथा अमर कंटक में मृत्युंजय आश्रम का संचालन किया जा रहा है। स्वामी हरिहरानंद सरस्वती को उनके सामाजिक, शैक्षिक व स्वास्थ्य के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय योगदान के लिए मध्य प्रदेश सरकार ने दर्जा राज्यमंत्री का पद देकर भी सम्मानित कर चुकी है।

# शिक्षाऋषि स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती

## स्वामी शुकदेवानंद के सपनें को साकार कर दी सच्ची श्रद्धांजलि

लोक पहल

**शाहजहांपुर।** गुरू की भावनाओं का आदर कर उनकी इच्छाओं को पूर्ण करने से बढ़कर एक शिष्य के लिए कोई श्रद्धांजलि नहीं हो सकती है। स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज ने शाहजहांपुर में शैक्षिक उन्नयन का एक सपना देखा था उनके सपने को साकार करने के लिए उनके शिष्य स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती ने कोई कसर नहीं छोड़ी। आजादी से पूर्व स्वामी शुकदेवानन्द सरस्वती ने शिक्षा और आध्यात्म का जो बीज बोया था वह आज वट वृक्ष बन चुका है। मुमुक्षु शिक्षा संकुल आज केजी से लेकर पीजी तक की शिक्षा एक ही कैम्पस में उपलब्ध कराने के साथ ही कानून की भी शिक्षा दे रहा है। करीब आधा दर्जन कमरों के साथ शुरू हुआ स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय आज एक विशाल कैम्पस के रूप में स्थापित हुआ है। इस का श्रेय अगर किसी को जाता है तो वह हैं मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता व पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द को इतना ही नहीं शिक्षा के क्षेत्र में इतना सब कुछ करने के बाद भी स्वामी चिन्मयानन्द के कदम अभी रुके नहीं है। वह स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज के सपने को साकार करने के लिए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कुछ बड़ा करने के लिए प्रयासरत है। यदि यह संभव हो गया तो मुमुक्षु शिक्षा संकुल का नाम युगों–युगों तक इतिहास में अमर हो जायेगा।। 03 मार्च 1947 को गोण्डा के गोगिया पचदेवरा गांव में एक जमींदार राजपूत परिवार में जन्मे कृष्णपाल सिंह उर्फ स्वामी चिन्मयानन्द ने वर्ष 1989 में मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता का कार्यभार संभाला। उस समय यहां की शिक्षण संस्थाओं तमाम मुकदमें चल रहे थे और आपसी खींचतान के चलते शिक्षण संस्थाओं का शैक्षिक स्तर भी गुणवत्तापूर्ण नहीं था। स्वामी चिन्मयानन्द ने अपनी दूर दृष्टि, कुशल निर्देशन में शनै शनै शिक्षण संस्थाओं की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए कार्य करना शुरू किया है। उनके मार्गदर्शन व प्रेरणा से ही शाहजहांपुर जनपद के बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य वैज्ञानिक, तकनीकि ज्ञान, साहित्य कला की शिक्षा प्रदान करने हेतु 25 फरवरी 1989 को कांचीकाम कोटी पीठ के जगतगुरु शंकराचार्य जी द्वारा मुमुक्षु आश्रम परिसर में श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ की आधारशिला रखी गई। इसके उपरांत जब शहर के गणमान्य लोगों व विधि विशेषज्ञों ने स्वामी जी के समक्ष शहर में एक विधि महाविद्यालय की आवश्यकता व महत्ता के बारे में बताया तो स्वामी जी ने मुमुक्षु शिक्षा संकुल में विधि महाविद्यालय स्थापित करने का संकल्प लिया। 25 फरवरी 2003 को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम विष्णुकांत शास्त्री द्वारा यहां विधि त्रिवर्षीय कक्षाओं के साथ इसका शुभारंभ किया गया। वर्ष 2007 में यहां विधि पंचवर्षीय कक्षाओं का प्रारंभ हुआ। वर्ष 2018 से यहां एलएलएम की कक्षाएं भी प्रारंभ हो गई है। इसके साथ ही स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय में तमाम विषयों में परास्नातक व प्रबंधन के कोर्स खोलकर स्वामी जी ने जनपद के युवाओं को एक बेहतर शैक्षिक सुविधाएं व वातावरण देने का काम किया है। शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ मुमुक्षु शिक्षा संकुल में स्वामी चिन्मयानन्द के निर्देशन में समय–समय पर आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता रहा है। मुमुक्षु आश्रम में आयोजित होने वाली रामकथा और रासलीला का रसास्वादन करने आसपास के जनपदों से श्रद्धालु पहुंचते है। वहीं समय–समय पर यहां पर संत सम्मेलन का आयोजन भी किया जाता है। वर्तमान में स्वामी चिन्मयानन्द के कुशल निर्देशन में मुमुक्षु शिक्षा संकुल में पांच शिक्षण संस्थाएं बच्चों से लेकर युवाओं तक को शिक्षा प्रदान कर रही है। श्रीराम जन्म भूमि मुक्ति आन्दोलन के प्रेरणता के रूप में अपनी कीर्ति पताका फहराने वाले पूर्व सांसद व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती एक प्रखर संत होने के साथ ही उन्होंने एक शिक्षा ऋषि के रूप में भी अपनी कीर्ति

फैलाई है। अगर राजनीति की जीवन की बात की जाये तो स्वामी चिन्मयानन्द ने बदायूं से भाजपा के टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़कर उस समय के दिग्गज नेता स्व0 शरद यादव को शिकस्त देकर एकाएक चर्चा में आये। इसके उपरान्त उन्होंने जौनपुर व मछली शहर से भी लोकसभा चुनाव में विजयी हासिल कर अटल बिहारी बाजपेयी सरकार में केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री के रूप में कार्य किया। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने असम की बोर्डो समस्या का हल निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वर्तमान में स्वामी चिन्मयानन्द मुमुक्षु शिक्षा संकुल में संचालित हो रही समस्त शैक्षिक संस्थाओं की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए दिन रात कार्य कर रहे हैं।

# आज भी प्रासंगिक है स्वामी विवेकानंद का मानव धर्म

कुलदीप दीपक

संसार अनेक तरह के द्वंद्वों के बीच से गुजर रहा है। कहीं द्वेष कहीं जाति, कहीं धर्म तो कहीं संप्रदायवाद को जेकर विवाद खड़े हो रहें हैं। हर तरफ कोलाहल और हाहाकार मचा है। हर कोई दूसरे को अनदेखा कर अपना हित तलाशने में जुटा है। सारे संबंध हाशिए पर आ गए हैं। ऐसे में अगर द्वंदों से मुक्ति का रास्ता कहीं नजर आता है तो उस मानव धर्म में जिसका सपना देश के युवा संन्यासी स्वामी विवेकानंद ने कई दशक पहले संजोया था। जब भारत की पहचान विश्व पटल पर रूढ़िवाद जैसी तमााम कुप्रथाओं को लेकर होती थी तब उन्होंने ही देशवासियों को जागरूक कर भारत को फिर से जाग्रत करने की आधार शिला रखी। साथ ही आध्यात्मिक भारत की प्रगति का मार्ग मजबूत किया। उन्होंने साफ तौर पर कहा था कि भारत की राष्ट्रीय एकता देश की बह रहीं विभिन्न धाराओं के एकाकार से ही संभव है। उन्होने इस बात को दुनिया के सामने 11 सितंबर 1893 को शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में बड़ी बेबाकी के साथ रखा। उन्होने धर्म को श्रेष्ठता प्रदान करते हुए सम्मेलन में आए धर्म प्रतिनिधियों से कहा था कि मनुष्य–मनुष्य के बीच भेद करना धर्म का काम नहीं है। जो धर्म मनुष्यों में टकराव पैदा करता हैए वह कुछ सिरफिरे लोगों का अपना विचार अथवा मत हो सकता है। उसे धर्म की संज्ञा देना मनुष्य के विवेक का अपमान करना है। उन्होंनें धर्म को द्वंद्व से परे बताया। उनका मानना था कि धर्म का आधार दया, ममता, आत्मीयता और सहानुभूति है। मनुष्य धरती पर रचनात्मक काम करने के लिए पैदा हुआ है। किसी धार्मिक विचार धारा विशेष का बल पूर्वक प्रचार और प्रसार करने के लिए नहीं। हमें समाज में समरसता लाने के लिए धर्म को द्वंद्व से अलग करना होगा। यदि ऐसा नहीं हो सका तो मानव सभ्यता अपने विकास के सही पथ से भटक जाएगी। आगे आने वाली पीढ़ियां ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ने के स्थान पर अज्ञान के घोर अंधकार में जा गिरेंगी। वे मानते थे कि धर्म मनुष्य को लौकिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए सहयोग करना सिखाता है। स्वामी जी ने धर्म सम्मेलन में सनातन धर्म को प्रभावी बताते हुए कहा था कि इसका मूल मंत्र समस्त मानव जाति को कल्याण मात्र है। सनातन हिंदू धर्म में किसी तरह की

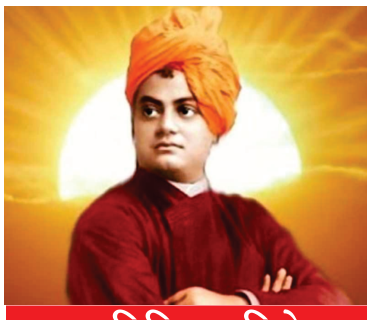

पुण्यतिथि पर विशेष

संकीर्णता अथवा नकारात्मकता के लिए कोई स्थान नहीं हैं। स्वामी जी ने शिक्षा पर खासतौर पर जोर दिया। वे कहते थे कि पश्चिम देशों की प्रगति और सफलता का रहस्य शिक्षा ही है। भारत और अमेरिका का उच्च वर्ग तो एक ही समान है, लेकिन भारत का पिछड़ा और निज वर्ग अशिक्षित है। हमें इनको शिक्षा के जरिए आगे लाने का प्रयास करना चाहिए। हमें शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों में विकास लाकर उनमें महान आत्माओं को समावेशित करना होगा। अशिक्षा भारत की तरक्की में बाधक है। वह जन साधारण को शिक्षित करके देश की मुख्यधारा से जोड़ने के प्रबल पक्षधर थे। वह मानते थे कि इनके शिक्षित होने से ही देश सच्चे अर्थों में मजबूत राष्ट के रूप में खड़ा हो सकेगा। उन्होने अंग्रेजी शासकों द्वारा दी गई शिक्षा को भी अव्यवहारिक बताया था। उन्होने शिक्षा की उपदेयता सिद्ध कर कहा था कि शिक्षा वो जो श्रद्धा को जन्म दे। ऐसे विचार देए जिसमें संपूर्ण मानवता का हित हो। व्यक्तित्व निर्माण के लिए श्रद्धापरक शिक्षा पर भी जोर दिया। गेरूआ वस्त्र धारण करने वालों को उसका प्रयोजन भी बताया। वह कहते थे कि मठ आदि निर्माण करके क्या होगा? इसे बेच बाच कर कुल राशि दरिद्र नारायण की सेवा में अर्पित कर दो। भला वृक्ष की छांव में बसेरा करने वालों को घर.द्वार की क्या जरूरत? जब देश के लोग रोटी कपड़े को तरस रहे हों तब हम अपने मुंह में ग्रास देते लज्जा आनी चाहिए। पश्चिम में धर्म प्रचार करने जाने के पीछे इनका मकसद देश के लोगों के लिए भरण पोषण के लिए शिक्षा व्यवस्था नही तो पूजा पाठ करना बेकार है। आडंबर है। शंख फूकना, घंटी बजाना बंद कर देना। दीप लेकर आरती उतारने का क्या प्रयोजन। अपनी मुक्ति की साधना और शास्त्र के ज्ञान का घमंड छोड़ दो। उन्होंनें संन्यासियों को संदेश दिया कि गांवो में घुमकर दरिद्र नारायण और दलितों की सेवा में जीवन अर्पित कर दो। ऐसे साधन जुटाओ जिससे दीन हीनों की सेवा हो सके। उन्होंने देश की जनता का आहान किया था कि सभी विवादों और कलह को समाप्त कर स्नेह की भव्य धारा को सर्वत्र प्रवाहित करें। भारत की बिखरी आध्यात्मिक शक्तियों के एकीकरण में ही राष्ट्रीय एकता निहित है। स्वामी जी के ये विचार आज भी उतने ही प्रांसगिक है जितने उनके जीवन काल में रहे। आज जब विश्व पटल पर हर देश जनता के हितों को अनदेखा कर अपनी साख बनाने में जुटा है तब स्वामी जी का दरशन उन्हें साधु संतों की भीड़ में एक अलग ऊंचाई पर खड़ा दिखाई देता है।

# जीवन में गुरु का अमूल्य योगदान : समीर शुक्ला

## ब्राह्मण समाज ने 5 गुरुजनों और 210 मेंधावियो को किया सम्मानित

लोक पहल

**शाहजहांपुर।** ब्राह्मण समाज की ओर से गुरुजन अभिनंदन अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय संयुक्त वित्त सचिव समीर शुक्ला ने मेधावियों को सम्मानित करते हुए कहा कि गुरु अगर कमजोर हो तो तमाम मुश्किल है जीना मुहाल कर देती है बनते हुए काम बिगड़ जाते हैं और स्वास्थ्य पर इसका असर दिखने लगता है जीवन में गुरु का योगदान अमूल्य होता है। सद्गुरु के बिना हम सब अधूरे हैं। अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य परिषद के जिला अध्यक्ष डॉ. केके शुक्ला ने कहा हर व्यक्ति के पीछे गुरु का हाथ होता है गुरु के बिना व्यक्ति का जीवन अधूरा है। ब्राह्मण समाज के प्रदेश महामंत्री हरिशरण बाजपेई ने कहा गुरु शब्द को देखा जाए तो गुरु दो अक्षरों से बनता है किसने पहला शब्द जिसका अर्थ होता है अंधकार

और दूसरा शब्द रूप जिसका अर्थ होता है उजियारा यानी गुरु के नाम से ही हम पहचान कर सकते हैं कि यह हमें अंधकार से उजियारे की ओर ले जाने का कार्य करते हैं। पूर्व प्रधानाचार्य केशव मिश्रा ने कहा गुरु का योगदान अमूल्य होता है सद्गुरु के बिना हम सब अधूरे हैं। परशुराम धाम के सभागार में मुख्य अतिथि समीर शुक्ला ने ब्राह्मण समाज के पदाधिकारियों के साथ पूजन कर यज्ञ में आहुतियां दी। डॉ राखी मिश्रा, बसंत कुमार त्रिवेदी, गौरव पांडे, डॉ. मधुकर, श्याम शुक्ला को अगवस्त्र तथा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। केशव चंद्र मिश्रा के संचालन में कार्यक्रम में डॉ सत्य प्रकाश मिश्रा, पूर्व ब्लाक प्रमुख विनोद अवस्थी, अवधेश दीक्षित, मुकेश दीक्षित, कौशल मिश्रा, रवि मिश्रा, राकेश पांडे, रामानंद दीक्षित, ब्लाक प्रमुख श्रीदत्त शुक्ला, अशोक मिश्रा, निर्विकल्प त्रिवेदी आदि का सहयोग रहा।

# वेद प्रकाश मौर्या को चुना गया नगर निगम का उपाध्यक्ष

लोक पहल

**शाहजहांपुर।** नगर निगम प्रांगण में महापौर अर्चना वर्मा एवं नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा की उपस्थिति में गठित कार्यकारिणी कमेटी की एक बैठक आयोजित की गई। जिसमें गठित कमेटी के सदस्यों द्वारा महापौर एवं नगर आयुक्त को पुष्प भेंट कर स्वागत व अभिनंदन किया गया। इसके उपरांत कमेटी के सदस्यों ने सर्वसम्मति से वार्ड संख्या 19 से पार्षद वेद प्रकाश मौर्य को कार्यकारिणी समिति का उपाध्यक्ष चुना। इसके साथ ही कार्यकारिणी समिति की अध्यक्ष महापौर अर्चना वर्मा एवं नगर आयुक्त द्वारा कमेटी के उपाध्यक्ष व सदस्यों को

पुष्प भेंट व माला पहना कर स्वागत किया। इस मौके पर कमेटी के उपाध्यक्ष व सदस्यों द्वारा नगर क्षेत्र की समस्याओं के सम्बन्ध में अवगत कराया गया। जिस पर महापौर व नगर आयुक्त द्वारा समस्याओं के समाधान हेतु नगर निगम टीम द्वारा भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया। बैठक में अपर नगर आयुक्त एस.के. सिंह, सहायक नगर आयुक्त मधुसूदन लाल आर्य, रश्मि भारती, महाप्रबंधक जल सौरभ श्रीवास्तव, मुख्य अभियंता सिविल एस.के. अम्बेडकर, लेखाधिकारी सी.पी. मौर्य, कर निर्धारण अधिकारी भूपेंद्र सिंह विसेन एवं नगर क्षेत्र के पार्षद तथा कार्यकारिणी समिति के सदस्य मौजूद रहे।

## / सम्पादकीय /

# सत्ता सुख और ठगता मतदाता

हालांकि लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनकर आए जनप्रतिनिधियों को सरकार बनाने या किसी सरकार में नियमों के अनुरूप शामिल होने के लिए पूरा अधिकार है लेकिन जब इस अधिकार पर मतदाताओं की भावनाओं को आहत कर केवल अपने सत्ता सुख और लाभ के लिए प्रयोग किया जाता है तो कहीं न कहीं लोकतंत्र की मूलभावना आहत होती दिखाई देती है। अभी जल्द ही महाराष्ट्र में एक बार फिर जो राजनीति उठा–पटक हुई है उसको लेकर कहीं न कहीं मतदाता यह सोचने को विवश जरूर है कि आखिर उसने जिस विधायक को चुना था वह किस विचारधारा का है। महाराष्ट्र की राजनीति में पिछले चार सालों से नाटकीय घटनाक्रम थमने का नाम नहीं ले रहे। अब राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के तिरपन में से चालीस विधायकों ने आश्चर्यचकित करते हुए एकनाथ शिंदे सरकार को समर्थन दे दिया। अजित पवार उपमुख्यमंत्री बन गए और राकांपा के आठ विधायक मंत्री पद पा गए। इसे कुछ लोग भाजपा की बड़ी जीत और शरद पवार को बड़ा झटका मान रहे हैं।

एकनाथ शिंदे खुश हैं कि उनकी सरकार को और ताकत मिल गई है। कई लोग इसे भाजपा की बदले की कार्रवाई मान रहे हैं। दरअसल, इस बार का विधानसभा चुनाव भाजपा और शिवसेना ने साथ मिल कर लड़ा था। भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी। मगर शिवसेना ने उसके साथ सरकार बनाने से इंकार कर दिया था। उस वक्त भी अजित पवार भाजपा के साथ खड़े हो गए थे। देवेंद्र फडणवीस ने मुख्यमंत्री और अजित पवार ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली थी। मगर राकांपा के विधायकों ने अजित पवार का साथ नहीं दिया और वह सरकार तीन दिन में ही गिर गई थी। फिर शिवसेना, राकांपा और कांग्रेस के गठबंधन से महाविकास अघाड़ी की सरकार बनी। मगर करीब दो साल बाद एकनाथ शिंदे ने बगावत कर दी और शिवसेना के ज्यादातर विधायकों को लेकर भाजपा से हाथ मिला लिया था। इस तरह उद्धव ठाकरे सरकार गिर गई। अब वही घटनाक्रम राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में दोहराया गया है।

इस बार अजित पवार के एकनाथ शिंदे सरकार में शामिल होने से निस्संदेह राकांपा को बड़ा झटका लगा है, क्योंकि उसके ज्यादातर बड़े और शरद पवार के भरोसेमंद नेता पार्टी से अलग हो गए हैं। कहा जा रहा है कि बागी नेता अब पार्टी के नाम और निशान पर भी अपना दावा ठोंकेंगे। हालांकि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी अजित पवार और उनके साथ गए नेताओं के कदम को गैरकानूनी बता रही है।

यह ठीक है कि चुन कर आए प्रतिनिधियों को सरकार बनाने के समीकरण तय करने का लोकतांत्रिक अधिकार है। मगर जिस तरह महाराष्ट्र में पिछले चार सालों में सैद्धांतिक मूल्यों को धता बताते हुए सत्ता में शामिल होने की दौड़ चल रही है, उससे आखिरकार ठगे मतदाता जा रहे हैं। मतदाता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव न केवल उनके व्यक्तित्व को देख कर करते, बल्कि उनकी पार्टी के सिद्धांतों को भी तरजीह देते हैं। शिवसेना को छोड़ कर अलग हुए नेता हो अथवा राकापा के नेता सभी ने कहीं न कहीं मतदाताओं की भावनाओं को आहत किया। इसी तरह राकांपा के विधायकों ने पार्टी से बगावत कर अपने मतदाताओं को ही ठगा है। हर राजनीतिक दल और विधायक चुनाव इसीलिए लड़ता है कि सत्ता में आए, मगर सिद्धांतों और नियम–कायदों को तिलांजलि देकर केवल सत्तासुख के लिए समझौता कर लेन से आखिरकार लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन ही होता है।

# विचार या विश्वास?

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

हम दिन प्रतिदिन की लोगों से मिलते हैं,की परिस्थितियों में एक दूसरे को विश्वास की दुहाई भी देते पाएं जाते हैं। सही मायने में देखा जाए तो यह विश्वास शब्द दुनिया में बड़ा खतरा बनता जा रहा है, क्योंकि हमें बार बार यह अहसास तो दिलाया जा रहा है कि हम एक दूसरे पर विश्वास रखे परंतु विश्वास करने की वजह से दूर किया जा रहा है क्योंकि यह एक याथार्थ सत्य है,जो लोग विश्वास करते हैं, वे किसी भी चीज पर विश्वास कर सकते हैं,उन्हें कोई भी चीज समझाई जा सकती है, क्योंकि विश्वास करने वाला आदमी कभी विचार नहीं करता। इसलिए दुनिया की हुकूमतें, दुनिया के राजनैतिक व्यक्ति, दुनिया के धर्म–पुरोहित, दुनिया के शोषण करने वाले लोग, कोई भी यह नहीं चाहते कि आप विचार करो। वे सब चाहते हैं, विश्वास करो। क्योंकि जब विश्वास करेंगे, तो दुनिया में कोई क्रांति नहीं होगी, कोई बगावत नहीं होगी, और शोषण मजे से होता रहेगा, इस के दम पर आसानी से मूढ़ बनाया जाता रहेगा और करने वाला व्यक्ति चुपचाप अपने विश्वास के मोह में वही तक समझ पाएगा जितना विश्वास कराने वाला व्यक्ति समझाना चाहता है क्योंकि विश्वास की ताकत के दम पर शनै शनै विचार की क्षमता किया जना बहुत सरल पद्धति है और आज का व्यक्ति भी विचार करने से घबड़ाया हुआ हैं,और विचार के न होने का यह परिणाम है कि विगत हजारों सालों से आदमी कष्ट उठा रहा है, न मालूम कितने प्रकार के, जिनका कोई हिसाब नहीं है, इसलिए विचार पैदा होना चाहिए। क्योंकि विचार बगावत है, विचार रिबेलियन है। विचार पैदा होगा, तो शायद बगावत भी पैदा हो और हम एक नई दुनिया बनाने में समर्थ हो जाएं।

और इसके लिए निश्चित ही पुरानी दुनिया तोड़नी पड़ेगी, नई दुनिया बनाने के लिएय पुराने ढांचे मिटाने होंगे, नये आदमी को जन्म देने के लिए वह दुनिया जो हमारे विचार करने की क्षमता को क्षीण कर रही हो क्या वह दुनिया भली हो सकती है? क्या आपको पता है, अब तक हजार सालों में पंद्रह हजार या उससे भी ज्यादा युद्ध लड़े जा चुके हैं और आज भी लड़ें जा रहे हैं, मेरे नजरिए से ऐसी दुनिया इंसानों की नहीं भेड़ चाल की दुनिया है जैसे एक भेड़ दुसरी भेड़ का अनुसरण कर बिना विचारे

गढ्ढे में गिर जाती है यही हाल आज आमजन का है सोचने वाली बात है जहां पांच हजार साल में पंद्रह हजार युद्ध लड़ने पड़े हों, जहां रोज युद्ध करने पड़ रहे हों, जहां रोज हत्याए हो रही है , जहां रोज शोषण हो रहे हैं, रिश्तों का , नैतिक मूल्यों का खुले आम व्यापार चल रहा है , भ्रष्टाचार अपनी बाहों में सब समेटने को तत्पर बैठा है और फिर भी हम बस विश्वास में जी रहे हैं और इस से बाहर आने के लिए बस एक दूसरे पर विश्वास कर रहे हैं बिना विचार किए जब की इस से मुक्त होने का एक ही सूत्र है, विश्वास करने से पहले, विचार करना जरूरी है,खोज तभी पूरी होगी जब उसमें विवेक से उत्पन्न विचार पल्लवित होगे, और इसके लिए प्राणों की पूरी ताकत भी लगानी पड़े तब भी हौसले बुलंद रखने की आवश्यकता है, जो ठीक लगे उसको स्वीकार करना का दम होने की आवश्यकता है, और इसमें निश्चित ही जो माता–पिता अपने बच्चों को विचार की क्षमता विकसित करने में सहयोगी बनेंगे, उनके बच्चे सदैव उनके लिए आदर से भरें रहेंगे। जो मां–बाप अपने बच्चों के लिए विचार और विवेक की शक्ति जगाने में सहयोगी होंगे, वे बच्चे आजीवन उन मां–बाप के प्रति सम्मान का अनुभव करेंगे। जो गुरु आदर नहीं मांगेगा, बल्कि इस तरह का जीवन जीएगा, जो कि बच्चे के भीतर स्वतंत्रता लाए, बच्चे के भीतर विचार और विवेक लाए, उस गुरु के प्रति उन बच्चों के माथे हमेशा के लिए झुक जाएंगे। आदर तो मिलता हैय मांगा नहीं जाता। प्रेम मिलता हैय मांगा नहीं जाता। सम्मान मिलता हैय खरीदा नहीं जाता। न भय दिखा कर पाया जाता है, न झपटा जाता है। लेकिन वह तभी मिलता है जब हम किसी की आत्मा को विकसित होने में सहयोगी बनते हैं। तो निश्चित ही वह आत्मा सदा के लिए ऋणी हो जाती है, वह आत्मा हमेशा के लिए अनुगृहीत हो जाती है, एक कृतज्ञता उसके भीतर पैदा हो जाती है। क्या आप अपने बच्चों को स्वतंत्र करने में सहयोगी हो रहे हैं? अगर हो रहे हैं, तो ये बच्चे आपको सम्मान देंगे। जितने ये स्वतंत्र होंगे, उतना सम्मान देंगे। क्या इन बच्चों में विचार पैदा कर रहे हैं? अगर इनमें विचार पैदा किया, तो ये अनुगृहीत होंगे। क्योंकि विचार इन्हें जीवन की बड़ी ऊंचाइयों पर ले जाएगा, जीवन के शिखरों पर ले जाएगा, जीवन की गहराइयों में ले जाएगा। विचारपूर्वक ये सत्य को किसी दिन जानने में समर्थ हो सकेंगे। ये आनंदित हो सकेंगे किसी दिन। और जिस क्षण इनके जीवन में आनंद उतरेगा, उस दिन आपके प्रति इनके जीवन को संवारने के ऋण को कभी भुलेंगे नहीं, उस दिन आपके प्रति इनकी कृतज्ञता, आपके प्रति इनकी धन्यता का कोई पारावार न होगा, कोई सीमा न होगी।

# नरेन्द्र मोदी: भारतीय राजनीति के सशक्त हस्ताक्षर

अंकुर त्रिपाठी 'विमुक्त'

मोदी जी पर सभी के अपने अलग विचार हो सकते हैं। बहुत से लोग उनसे सहमत हो सकते हैं और असहमत भी। बहुत से लोग उनके विरोधी भी होंगे तो बहुत से लोग उनके शुभचिंतक भी। परन्तु आज मैं किसी भी तरह की राजनैतिक बहस में जाना नहीं चाहता। मैं इस विषय पर कोई चर्चा करना नहीं चाहता कि वर्तमान समय में उनकी स्वीकार्यता कितनी है। इसको लेकर तमाम बहस रोज समाचार चौनल पर देखी व सुनी जा सकती है। नीचे जो तस्वीर आप देख रहे हैं वह तस्वीर है नरेंद्र दामोदर दास मोदी की। इस तस्वीर को लेकर एक रोचक किस्सा बेहद चर्चित है । कहा जाता है कि यह फोटो मणिनगर के फोटोग्राफर ने यूं ही मजाक मजाक में ले लिया था।

मोदी जी संघ कार्यालय के बगल में बने एक कमरे के मकान में रहते थे और कमरे के बाहर बने चबूतरे पर बैठ कर बगल के दुकान वाले से बातें भी करते थे दरअसल मोदी जी को यह कमरा इसी दुकान वाले की सिफारिश पर मिला था। एक दिन फोटोग्राफर हितेश भाई शाह दुकान पर आए थे बातों बातों में मोदी जी ने पूछा कि यह कैमरा कैसे काम करता है? हितेश भाई ने मोदी जी की एक फोटो ले ली बाद में भूल गए थे फिर उन्होंने जब रील डिवेलप करवाई तब मोदी जी का फोटो भी प्रिंट हो गया और उसे उन्होंने अपने स्टूडियो के दराज में रख दिया था। बाद में जब मोदी जी गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे तभी हितेश भाई ने उन्हें यह फोटो दिखाई थी।

इस फोटो को यहां प्रदर्शित करने के पीछे यही एकमात्र उद्देश्य है कि व्यक्ति कितना भी छोटा क्यों न हो यदि उसको अपने कार्यों को लेकर जिजीविषा है तो वह

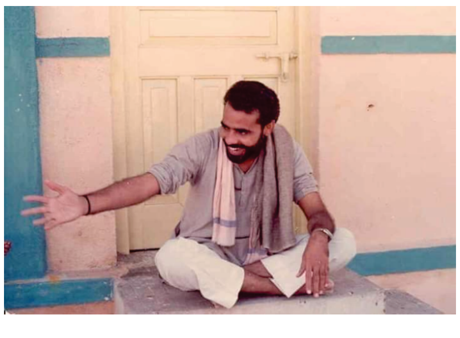

अवश्य सफल होता है। किसी देश का प्रधानमंत्री बन जाना इतना भी आसान नहीं होता। यह कोई रातों रात का करिश्मा नहीं होता। यह होता है एक लम्बा संघर्ष, एक त्याग, एक समर्पण। इसमें सैकड़ों राते खपी होगी। सैकड़ो दिन कड़ी धूप में गुजारने पड़े होंगे। तब जाकर भारतीय राजनीति में स्वयं को स्थापित किये जाने की स्थिति में वे आयें होंगे। जिस देश की राजनीति में परिवारवाद हावी हो उस देश की राजनीति में स्वयं को स्थापित करना इतना आसान नहीं होता।

बहुत से लोग नरेंद्र मोदी के विरोधी होंगे परन्तु इस विषय पर आकर उनका मत स्पष्ट हो जाना चाहिए कि व्यक्ति ने अंततः संघर्ष उच्च स्तरीय किया होगा। एक कार्यालय में कुर्सी लगाने वाला साधरण व्यक्ति कब एक देश का प्रधानमंत्री बनेगा यह भला कहाँ कोई सोचा होगा! परन्तु जब आपके विचार और लक्ष्य सकारात्मक हो तो सफलता अपना मार्ग स्वयं चुनती है। मोदी जी कि यह तस्वीर बहुत कुछ सीखने को मजबूर करती है कि व्यक्ति को यदि सफल होना है तो उसे अपनी जमीन से जुड़ा रहना होगा। उसको धरातल पर रहकर लोगों की पीड़ा को समझना होगा अन्यथा सफलता प्राप्त कर पाना बेहद मुश्किल है। किसी व्यक्ति की बुराई के लिए बहुत कारण हो सकते हैं परन्तु उनसे कहां कुछ सीखने को मिलता है। यदि किसी व्यक्ति से कुछ सीखना है तो उसके अंदर निहित सकारात्मकता को खोजिए, आपको बहुत कुछ अंगीकार करने को प्राप्त होगा। मैं किसी व्यक्ति की कभी बुराई करना पसंद नहीं करता, उसमें वह बेहतर कारक खोजने का प्रयास करता हूं जो मुझे भी बेहतर बना सकें। बुराई और नकारात्मक विचार एक नकारात्मक व्यक्तित्व को जन्म देते हैं। फिलहाल राजनैतिक चश्मे से विरोध के अलग कारण हो सकते हैं परन्तु राजनैतिक परिदृश्य से परे जाकर बहुत कुछ सीखा जा सकता है। ऐसे बहुत से हस्ताक्षर है अपनी भारतीय राजनीति में।

# जरूरी है सकारात्मक रहना

एक बार दो पंडितों को प्रसाद बाँटने की जिम्मेदारी दी गई। प्रसाद करीबन दो सौ लोगों को देना था। लेकिन प्रसाद थोड़ा सा ही था। दो सौ लोगों को देना मुश्किल वाला काम था। एक

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

पंडित जी ने सुनाना शुरू कर दिया, 'बहुत कम प्रसाद है। इसे इतने लोगों में कैसे बाँट पाऊँगा ?' इतना बोल वह चले गये। तब दूसरे पंडित जी ने मौके को लपका, 'आप चिंतित ना हो जजमान। हर व्यक्ति को प्रसाद मिलेगा।'

फिर पंडित जी कथा सुनाना शुरू किये। भक्ति विचार से जुड़े लोग बड़ी तन्मयता के साथ सुनने लगे। इसबीच बहुतेरे लोग वहाँ से निकल पड़े। जीतने लोग आखिर में बच गए उनके लिए प्रसाद में पर्याप्त था। पंडित जी ने बुद्धि और सकारात्मक सोच से वाहवाही लूट ली।

यह सकारात्मकता हर व्यक्ति के जीवन मे हमेशा रहनी चाहिए। सकारात्मक व्यक्ति कभी अफसोस व्यक्त नहीं करते। उन्हें अपने जीवन से कभी शिकायत नहीं होती। वह हर क्षण नया करने और सीखने को तैयार होते है। क्योंकि जिंदगी का दूसरा नाम चलती हुई गाड़ी है। यह

कभी रुकता नहीं। बस चलते ही चलते जाना। जीवन में रुक या आराम से चलने वाला व्यक्ति पीछे रह जाता हैं। वही रफ्तार और मंजिल तय करके चला जाए तो राहें आसान हो जाती हैं।

मगर जिंदगी की कुछ अलग चाल होती हैं। यह आपको अपने तरीके से चलायेगी। जीवन के इस राह में दुख–सुख, सफलता–असफलता सबकुछ मिलेगी। लेकिन उतार–चढ़ाव भरे इस राह में जो लोग सकारात्मक विचारों को कभी नहीं छोड़ते आगे वही बढ़ते है। वही लोग जीवन का आनंद उठा पाते हैं। तो क्याआप तैयार हैं सकारात्मकता के साथ जीने को?

# टमाटर के नखरे हाय–तौबा

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर उ.प्र.

मेरी इतनी भी क्या फिक्र बस सौ, एक सौ पचास पर इतना जिक्र काहे हो रहा है। टमाटर हूँ बस जरा सा भाव क्या बढ़ गया मेराए सोशल मीडिया में हाहाकार मच गया। बस यही डर दिखना चाहिए सब के मन में मुझे लेकर ताकि लोग मेरा भी सम्मान करे हर मौसम। इतिहास के पन्ने पर फेमस होने की आशा लिया बैठा हुआ टमाटर हवा में उड़ रहा है उछल रहा है। कोई लाली लिपस्टिक का नाम दे रहा है तो कोई टमाटर म्यूजियम में रख रहा है।

देसी के साथ जब से विदेशी टमाटर आया है, देसी कुछ ज्यादा ही भाव खा रहा है। विदेशी के भाव तीसरी मंजिल पर तोएदेसी के भाव आसमान पर। देसी खाकर कोई लाल हो रहा हैएतो कोई उसके भाव सुनकर लाल हुआ जा रहा है। जो खरीद रहा है वो लाल हैएजो नहीं खा पा रहा है, वह मारे शर्म के लाल है। किसी के टमाटर खा के गाल लाल हो रहे हैं और कुछ की टमाटर खरीद कर जेब का हाल बेहाल है। जो टमाटर नहीं खरीद पा रहा है, वह बैंगन की तरह काला या फिर कददू की तरह मुंह बनाकर सब्जी मंडी से निकल रहा है। गलियों में टमाटर के ठेले

नजर नहीं आ रहे हैं। ठेले में टमाटर दुबका पड़ा है, कहीं कोई गरीब देख न ले, इसलिए टमाटर हर जगह से नदारद है हर कोई ढूंढ रहा किस ठेले पर टमाटर सस्ता बिक रहा है, आयकर वाले भिखारी के भेष में मंडी में घूम रहे हैं। टमाटर जिसने खरीदा, बस चल भाई अंदर। कई टमाटर शरीफ की तरह मंडी से गायब, तो कोई गरीबों से बच रहा है तो कोई नाली में सड़ रहा है। बस केवल अमीर ही टमाटरों के पीछे भाग रहे है। अब अगर आप किसी के घर जाएं और खाने की मेज पर टमाटरों का सलाद दिखाई तो समझ लिजिए की आदमी खानदानी रईस है। यानी की टमाटर खरीदने की क्षमता से किसी की औकात का पता चल जाता है। टमाटर फेसबुक पर सबसे ज्यादा पसंद किया जा रहा है। हजारों की संख्या में उसे साझा कर रहे हैं, वाटसएप पर नए–नए तरीके से टमाटर की तुलना महिलाओं के हाव भाव से की जा रही है। टमाटर पर चुटकुले बनाए जा रहे हैं। हीर–रांझा की जोड़ी से भी ज्यादा लोकप्रिय हो गया टमाटर। सब्जियां भी बेहाल पड़ी हुई है कोने में टमाटर के नखरे देख कर। अब तो टिंडा, लौकी, तुरही बनाकर काम चलाओ। भाई इस समय टमाटर किसी मुख्यमंत्री से कम नजर नहीं आ रहा है। अभी तो माहौल ऐसा लग रहा है या तो सरकार बदले या फिर टमाटर के भाव।

# मैं सदियों से जल बनकर....

कविता

मैं सदियों से जल बनकर,
बहती आई हूं।
तुम भी शिलाखंड से बैठे,
सदियों से हो।
तुम अपनी स्थिति छोड़,
नहीं पानी हो पाए।
मैं भी खुद को छोड़ नहीं,
पाषाण बन सकी।
बस इतना ही तृप्ति भाव,
है मेरे मन में,
करके मैं स्पर्श,
तुम्हारे चरणों का
बहती आई हूं।
मैंने कितने यत्न किए,
मैं थोड़ा उछलूं अपने पैरों पर।
पर तेरे अधरों तक,
किंचित पहुंच न पाती।
तुम भी तो हो,
दम्भ में मुझसे ऊंचे इतने।
नीचे झुककर,
आलिंगन में,
भरना भी स्वीकार नहीं है।
तुमको पाना ही ध्येय रहा है,
आदिकाल से।
सहकर आतप,
भाप बनी मैं,
उड़ी धरा से।
फिर बदली का रूप ले लिया।
सोचा तेरे अधरों का,
स्पर्श करूंगी
जी भर कर मैं।
भरकर तुझको,
कोमल कोमल भुजपाशों में,
युगों युगों की इस तृष्णा को,
तृप्ति मैं दूंगी।
पर तुम फिर से,
निष्ठुर निकले पहले जैसे।
मैं बदली बन,
बरसी तुम पर,
अपने जी भर।
रहे अचेतन,
तुमने अपनी बाँह न खोली।
न ही तुमने बांधा,
अपने भुजपाशों में।
मेरे सारे स्वप्न टूट कर,
फिर से बिखरे।
मन का पंछी उड़ कर,
फिर से गिरा धरा पर।
मैं अधरों तक आते–आते,
बह कर फिर से,
नदी हो गई।

डा इन्दु अजनबी

# गजल

आँखें तेरी क्यों हैं नम।
आखिर तुझको कैसा गम।

ऐसे याद किया मत कर,
हर हिचकी में निकले दम।

बस कर अब मर जाऊँगा,
ढा मत मुझ पर और सितम।

खुशियां ही खुशियां जब हों,
जाने दिन क्यों लगते कम।

तुझमें ही 'ऋतुराज' कहीं,
अहसासों सा जाऊँ जम।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

# सब्र

बिन बारिश के, धरती बहुत तरसती है।
बूंदे जब जमकर बरसती है,
मिट्टी की सौंधी खुशबू लिए,
नवयौवना सी उल्लासित
हो मयूर सी नाच उठती है
आसमाँ से मिलने के लिए
बेचैन धरा,
क्षितिज के उस पार तक जाती है।
जानती है अपने प्रिय से,
मिलन असंभव है।
फिर भी दिन–रात,
आसमाँ को तकती है।
संग की चाह में,
धरा अपनी निश्चित धुरी को
तय करती रहती है।
इस उम्मीद में, शायद असंभव संभव हो जाए।
सब्र का बांध टूट जाए, किसी दिन,
एक दिन, उसका।

राजश्री सिन्हा
सोफिया (बुल्गारिया)

# लोक लुभावन बजट

आई बजट की वेला,
बलम तुम चिंता न करियो.
टैक्सन को खेलम खेला..बलम तुम....
बाप नाहिं अब की हैं मइया
अरबों रुपैयन की ता ता थइया
लाभ मिलै चाहै मिलै न घेला...बलम तुम...
चीजें सब अकास पहुंचाई
ऊपर पहुंचि हंसै मंहगाई
है विकास या झमेला.....बलम तुम...
बाट देखि अंखियां पथराई
बेकारी हर ओर है छाई
काम धाम फेलम फेला...बलम तुम..

दिनेश रस्तोगी

# गज़ल

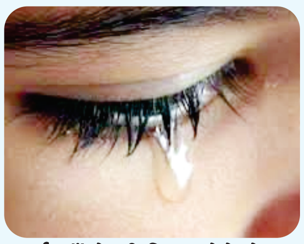

दर्द आँखों की गिजा होने से।
अश्क तड़पा है जुदा होने से।

मुफलिसी आ ही गई जब आड़े,
बचना मुश्किल है बुरा होने से।

रात भर नींद नहीं आई है,
तेरे बे–बात खफा होने से।

आ न पाया करीब अँधियारा,
दिल सरेआम जला होने से।

दूर हो जाऊँ न अपनों से मैं,
'ज्ञान' डरता हूँ बड़ा होने से।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

# कित्ता 'लाल' हो गया टमाटर!

रेखा शाह आरबी
बलिया

टमाटर भी क्या चीज है.. यदि किसी महिला को कह दिया जाए कि आपके गाल टमाटर जैसे लाल हैं तो या तो वह शर्म से सुर्ख हो जाएगी या गुस्से के मारे सुर्ख होकर चप्पल निकाल लेगी । दोनों स्थिति में महिला का सुर्ख अर्थात लाल होना तय है। टमाटर यहां पर एक मजबूत पक्ष है जो एक तरफ आपके मन की अभिव्यक्ति का साधन बन कर भी तठस्य रूप में आपके काम को बना भी रहा है बिगाड़ भी रहा है।

उसे तठस्य रूप में देखकर कुछ भ्रम मत पालिए की टमाटर कुछ करता–धरता नहीं है और ना ही टमाटर को अपने बारे में कोई गफलत है। वह तो बस सही समय का आने का इंतजार करता है और आजकल टमाटर का ही समय आया हुआ है इसीलिए वह खूब गुस्से से लाल पीला है और सब पर रोब और रूआब झाड़ रहा है। जिसके कारण पहले किलो के हिसाब खाने वाले लोग अब पीस के हिसाब से खा रहे हैं। टमाटर को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि वह शिखर को भी छूता है और धरातल पर धराशाई होने का भी सुख लेता है। ऐसे तो आलू गोभी प्याज सब ऊपर नीचे होते रहते हैं लेकिन टमाटर का ऊपर नीचे होना कुछ ज्यादा ही महत्व रखता है। क्योंकि इस की पैठ हर दर पर रहती है। टमाटर का भाव बढा होना कवियों में हर्ष की लहर दौड़ा गया है। क्योंकि कवि सम्मेलनों में उबाऊ कविता से पकी हुई जनता अब उन पर टमाटर फेंकने की जुर्रत नहीं करेगी और अब कविगण अपनी उबाऊ और पकाऊ कविता जनता को सुना–सुना कर उनके ऊपर जी भर अत्याचार करने के लिए स्वतंत्र है और जनता सुबकने के सिवा कुछ नहीं कर सकती है और आजकल आप जब भी बाजार में टमाटर की खरीदारी करने के लिए जाएं तो दाएं बाएं

आगे पीछे हर तरफ ध्यान देकर ही टमाटर की खरीदारी करना समझदारी की बात है । जहां तक हो सके चेहरे पर मास्क लगाकर या अंधेरे में ही टमाटर की खरीदारी करने जाएं। क्योंकि इनकम टैक्स वाले अब कुछ दिन टमाटर मंडी में ही डेरा डाले रहेगे और जिसको भी एक या दो किलो टमाटर खरीदारी करते हुए देख लेगे। उनके घर और संस्थान पर इनकम टैक्स की रेड पड़नी तय मानी जा रही है तो टमाटर इस समय बचकर खरीदने और खाने में ही भलाई है क्योंकि इनकम टैक्स वालों की नजर में इस समय टमाटर खाना आम आदमी के बस का नहीं उसके लिए कुछ खास लोग ही खरीदारी कर सकते हैं। तो आपकी नजर टमाटर पर उनकी नजर टमाटर खरीदने वाले पर बराबर बनी हुई है और लगे हाथ टमाटर उन लोगों को भी बहुत राहत दे दी है जो पथरी के शिकार रहते हैं हमेशा अन्य लोगों को टमाटर वाली सब्जी टमाटर सूप खाते पीते देखकर उनके अंदर जलन कुढन मची हुई रहती थी। अब उन्हें अपार संतोष मिल रहा है जिस तरह वह टमाटर नहीं खा सकते हम लोग भी अब टमाटर नहीं खा सकते तो टमाटर एक और उपयोग अनेक इसी को कहते हैं हर कोई अपने अनुसार इसका उपयोग अपने मनोनुकूल कर रहा है।

# गीतिका

दिल की बात कह सके
जिसको हम अकेले में
दोस्त एक ऐसा भी
जरुर होना चाहिए
मिले उजाला जमाने में
सबको बराबर –बराबर
कुदरत का कुछ ऐसा
दस्तूर होना चाहिए
मुफलिसी में बेच दे
कोई ईमान अपना
ऐसा भी नहीं कोई
मजबूर होना चाहिए
मिले उन्हें भी मेहनत का
पूरा वाजिब हक
उन्हें भी ईमानदारी पे
गरुर होना चाहिए
फकत हम ही रहे खुशहाल
ये तो काफी नहीं
दर्द गरीबो का भी
दूर होना चाहिए

मलय चक्रवर्ती, लखनऊ

# नफरतों को गीत गज़लों से मिटाते ही रहे

## धूमधाम से मनाई गई ख्यातिलब्ध कवि राज बहादुर 'विकल' की जयंती

लोक पहल

शाहजहांपुर। देश के प्रख्यात कवि राजबहादुर विकल का जन्मोत्सव यहां धूमधाम से मनाया गया। नगर आयुक्त संतोष शर्मा के साथ विकल के पुत्र अजय सक्सेना और स्थानीय कवियों ने कवि तिराहा पहुंचकर प्रतिमा पर फूल मालाएं चढ़ाएं। जिला पंचायत सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र पाल यादव और विशिष्ट अतिथि विनोबा सेवा आश्रम के संस्थापक रमेश भइया ने कवि विकल के चित्र पर फूल मालाएं अर्पित कीं। इसके बाद कवि एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

**गीतकार सरोज मिश्र ने सुनाया**–तुम वहां की धूप से प्रिय फूल सा आंचल बचाना। मैं यहां बीते समय की छांव में आनंद से हूं।

**कवि डॉ प्रशांत अग्निहोत्री ने सुनाया**–बंधे पंख जब खुलें, तभी तो नापेंगे आकाश। खोले पंख शिकारी सत्ता, उसे कहां अवकाश।

**वरिष्ठ कवि चंद्रशेखर दीक्षित ने सुनाया**– विकल हो गई हैं विकल की सभाएं। कंठ अवरुद्ध है आंख भी डबडबाएं। शहीदों की नगरी के जगमग सितारे। चमक आपकी हमको राहें दिखाएं।

**संयोजक कुलदीप दीपक ने सुनाया**–जिंदगी भर चेतना के गीत गाते ही रहे। झोंपड़ों का घुप अंधेरा भी मिटाते ही रहे। आंधियों की आपने परवाह बिल्कुल भी नहीं की, नफरतों को गीत गजलों से मिटाते ही रहे।

**गीतकार दीपक कंदर्प ने सुनाया**–आओ कुछ काम करें। उसको बदनाम करें। धीरे–धीरे लेकिन रोज सुबह शाम करें।

व्यंगकार उमेश सिंह ने कवि विकल का स्मरण करते हुए कहा, कवियों के अखाड़े के पहलवान थे।

**नवगीतकार ज्ञानेंद्र मोहन ज्ञान ने गुनगुनाया** –सत्य के प्रतिमान सूली पर टंगे कृशकाय सारे। और जो भी हैं समर्थक, हैं खड़े असहाय सारे।

**कवि अरुण दीक्षित अनभिज्ञ ने सुनाया**–कोई यहां असल का है तो कोई यहां फसल का है। अग्निपंथ के कवियों में पर, केवल नाम विकल का है।

डॉ. सुरेश सुरेश मिश्रा ने विकल जी को विराट व्यक्तित्व का धनी बताया। वरिष्ठ पत्रकार ओंकार मनीषी ने कहा कि कवि विकल मानवता के प्रबल पक्षधर और साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र थे। पुरुषोत्तम आदर्श कन्या इंटर कॉलेज जलालाबाद के प्रबंधक मोहम्मद इरफान ने कहा कि विकल जी ने शिक्षा के क्षेत्र में भी नया कीर्तिमान स्थापित कर क्षेत्रीय छात्राओं के लिए कॉलेज खोलकर एक बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए कवि इंदु अजनबी ने विकल के जीवन से जुड़े संस्मरण सुनाएं। साथ ही पिता पर अपनी एक मर्मस्पर्शी रचना भी सुनाई। उन्होंने कहा, एक पिता तब मर जाता है। उसके बाद जिया ही क्या, बेटे की जब सुन लेता है मेरे साथ किया ही क्या है। विशिष्ट अतिथि समाजसेवी रमेश भैया ने कहा कि कवि विकल ने साहित्य की अनवरत सेवा कर देश में जनपद का नाम रोशन किया। उनका विराट व्यक्तित्व आज भी समाज को आलोकित कर रहा है। मुख्य अतिथि पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र यादव ने कवि विकल का भावपूर्ण स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने साहित्य जगत में जनपद का नाम रोशन कर नई प्रतिभाओं में चेतना जगाकर उन्हें नया रास्ता दिखाया। अल्पना श्रीवास्तव ने कहा कि उनका साहित्य समाज को आज भी दिशा दे रहा है। आयोजन में पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अजय यादव वरिष्ठ रंगकर्मी प्रमोद प्रमिल, सरोज श्रीवास्तव, पत्रकार संजीव गुप्ता, सूर्य प्रकाश सक्सेना, बृजेश सक्सेना आदि शामिल रहे पूर्व में अतिथियों का बैज लाकर स्वागत किया है। कवियों को अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया गया। संचालन डा. इंदु अजनबी ने किया।

# एचडीएफसी बैंक ने 'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस' पर किया 'जनजागरण अभियान' का आयोजन

## नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने किया शुभारंभ, बांटे कपड़े के थैले

लोक पहल

शाहजहांपुर। एचडीएफसी बैंक के तत्वधान में 'अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस' के अवसर पर 'जनजागरण अभियान' चलाया गया। अभियान का शुभारंभ बैंक परिसर से नगर आयुक्त संतोष शर्मा व सहायक नगर आयुक्त रश्मि भारती ने वेंडर्स को कपड़े के निशुल्क बैग वितरित कर किया। पूर्व में बैंक के प्रबंधक जितेंद्र श्रीवास्तव व शाखा प्रबंधक नागेंद्र सिंह ने बुके देकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने बैंक द्वारा इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रयास को समस्त जनता सहित विक्रेताओं को अमल में लाने से ही देश को हम पॉलिथीन मुक्त कर सकते है। सहायक नगर आयुक्त रश्मि भारती ने कहा कि

हमें इस महत्वपूर्ण अभियान को निचले स्तर तक ले जाकर जागरूकता का प्रयास करना होगा। बैंक की उपप्रबंधक स्वाती सक्सेना के संयोजन में हुए कार्यक्रम में सदर बाजार, बहादुर गंज में जनजागरण अभियान चलाकर दुकानदारों और आम लोगों को कपड़े के थैले वितरित किये। उपप्रबंधक सुधीर उपाध्याय की अगुवाई में आशीष श्रीमाली, अभिनव गुप्ता, आयुषी वर्मा, चंदन गुप्ता, श्याम मिश्रा व सोम गुप्ता का सहयोग रहा। स्वाती सक्सेना व सुधीर उपाध्याय ने खरीदारों से अनुरोध किया कि वे अपने घर से सामान खरीदने के लिए निकलने से पहले एक कपड़े का थैला लेकर निकलें और दुकानदार से पॉलिथीन न मांगे। आपरेशन प्रबंधक जितेंद्र श्रीवास्तव ने अभियान के सहभागियों को सम्मानित किया।

# इंदु से निकला है हिंदू शब्दः डा श्रीकृष्ण सिंह

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कालेज के इतिहास विभाग में 'हिंदू शब्द की व्युत्पत्ति' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में शासकीय डिग्री कालेज जलालाबाद के प्राचार्य प्रो. श्री कृष्ण सिंह ने कहा कि कुछ इतिहासकार हिन्दू और हिन्द शब्द की उत्पत्ति भारतवर्ष का प्राचीन नाम इंदु अर्थात चन्द्रमा शब्द से मानते हैं। उनका मानना है कि हिन्दू शब्द सिन्धु से नहीं इन्दु अथवा चन्द्रमा से बना है। यूरोपीय लोग हिन्दू को इन्दु ही कहते थे और हिन्दुओं के देश को इंदीय अर्थात चन्द्रमा के समान अपभ्रंश इंडिया कहते थे। चीनी यात्री हुवेन्त्संग ने लिखा है भारत के कई नाम हैं। उन्होंने कहा कि हिंदू को सिंधु से जोड़ना गलत व्याख्या है। कालेज के कला संकाय प्रभारी डा आलोक मिश्र ने कहा कि देश के आदिवासी इलाकों में एक मुहिम चल रही है कि होली न जलाओ क्योंकि होलिका तथाकथित निचली जाति की थी या फिर रावण दहन न करो क्योंकि वह अनार्य था।यह सब हिंदु समाज को तोड़ने की कोशिशें है। इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा विकास खुराना ने कहा कि हिंदू शब्द पर अभी और शोधों की जरूरत है, वस्तुतः यह राष्ट्रीयता का सूचक है। मुगलों के समय अवध आगरा के प्रांत को हिंदुस्तान नाम मिला जो ब्रिटिश भारत में पूरे भारत के लिए उपयोग किया जाने लगा। गोष्ठी का संचालन डा पद्मजा मिश्रा, आभार डा धर्मवीर सिंह परमार ने ज्ञापित किया। इस अवसर पर डा दीपक सिंह, डा रामशंकर पांडे, डा श्रीकांत मिश्रा,प्रज्ञा शर्मा, डा मानवेंद्र सिंह सहित अनेक छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

# कैमरे की नजर में होगी कांबड़ यात्रा

## सात जोन और 17 सेक्टर में बांटा गया यात्रा का रूट, मंडलायुक्त व एडीजी ने तैयारियों को लिया जायजा

लोक पहल

शाहजहांपुर। कोतवाली जलालाबाद में मंडलायुक्त सौम्या अग्रवाल व एडीजी विजय कुमार मीणा ने कांवड़ यात्रा की तैयारियों के सम्बंध में बैठक में अधिकारियों को कांबड़ यात्रा के दौरान पूरी सजगता बरतने के निर्देश दिए। शिव भक्ति के महीने सावन की शुरूआत के साथ ही कांबड़ यात्रा की तैयारियां भी शुरू हो गई है। पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा ने बताया कि प्रशासन सीसीटीवी के जरिए कांबड़ यात्रा पर नजर रखेगा। जिले में करीब 70 किलोमीटर दूरी का कांबड़ यात्रा रूट है। कांबड़ यात्रा के मार्ग में 34 संवेदनशील स्थान चिन्हित किये गये है जहां स्टैटिक मजिस्ट्रेट तैनात किये जाएंगे। कांबड़ यात्रा को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए रूट को सात जोन और 17 सेक्टर में बांटा गया है। जोन की जिम्मेदारी नगर में सिटी मजिस्ट्रेट की होगी जबकि तहसील क्षेत्रों की जिम्मेदारी सम्बन्धित एसडीएम की होगी। सभी 17 सेक्टर में सेक्टर मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये है। सम्बन्धित थाना प्रभारियों को यातायात प्रभारी बनाया गया है उनकी निगरानी सीओ यातायात करेंगे। रूट पर सभी प्रमुख स्थानों पर उपनिरीक्षकों और पुलिसकर्मियों को तैनात किया जायेगा। बिजली के खंभों पर आठ फीट पन्नी से कबर्ड किया गया है। यहां पानी के टैंकर के अलावा खुले में रखे हुए ट्रांसफार्मर को वेरीकेट कर दिया गया है। डीजे की ऊंचाई 12 फीट से अधिक नहीं होगी सभी मानक के अनुसार डीजे बजाए जाएंगे कोई भी अभद्र और भड़काऊ गाना डीजे पर नहीं बजाया जाएगा। जिस के निर्देश सभी संचालकों को दिए गए है। सावन मास में शराब और मीट की दुकानें बंद रहेंगी। बैठक में सभी से सहयोग की अपील की गई। ट्रैफिक प्लान बना लिया गया है। बड़े

वाहनों को कैसे डाइवर्ट किया जाना है जिसको लेकर सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। बैठक में मंडलायुक्त सौम्या अग्रवाल, एडीजी विजय कुमार मीणा, आईजी डा. राजेश कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा, जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह, सीडीओ विजय बहादुर सिंह, एडीएम संजय पांडे, एसपी ग्रामीण संजीव बाजपेई, एसडीएम अंजली गंगवार, सीओ अजय कुमार राय, कोतवाल प्रवीण सोलंकी ने उपस्थित लोगों को कावड़ यात्रा के बारे में जानकारी दी।

# पुरातन छात्र डा मनीष कुमार ने भेंट की अलमारी

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कॉलेज के वाणिज्य विभाग के पुरातन छात्र डॉ मनीष कुमार ने विभाग के शिक्षक–कक्ष में प्रयोग हेतु लोहे की टेबिल कम अलमारी भेंट की। उन्होंने यह अलमारी विभागाध्यक्ष प्रो अनुराग अग्रवाल को सौंपी। इस अवसर पर डॉ कमलेश गौतम, देव सिंह कुशवाहा, अखिलेश कुमार, निखिल कुमार के अतिरिक्त महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार के शोधार्थी व वाणिज्य–विभाग के पुरातन छात्र विजय अग्रवाल भी उपस्थित थे। वर्तमान में डा मनीष ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ के वाणिज्य विभाग में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। विभागाध्यक्ष प्रो अनुराग अग्रवाल ने उन्हें महाविद्यालय की ओर से प्रशस्ति पत्र सौंपा।

# अजब-गजब जान न पहचान, फिर भी करोड़ों की आर्थिक मदद

■ टीएससीटी ने तीन वर्ष में 115 दिवंगत शिक्षकों के परिवारों का किया 25 करोड़ का आर्थिक सहयोग
■ बिखरते परिवारों को मिल रही बड़ी राहत

फुरकान हाशमी

**पीलीभीत।** यह भी एक अजब दुनिया है। जिसमें न तो कभी कोई एक दूसरे से मिलता रहा है और न ही कोई जान पहचान का होता है। फिर किसी तरह का आपस में कोई रिश्ता तो हो ही नहीं सकता। बावजूद इसके दुख की घड़ी में सब साथ मिलकर एक दूसरे की मदद हर माह करने को आतुर रहते हैं। मदद भी छोटी मोटी नहीं, बल्कि लाखों में होती है। हैरान करने वाला यह कारनामा उ. प्र. के सरकारी स्कूलों के शिक्षक कर रहे हैं। टीचर्स सेल्फ केयर टीम (टीएससीटी) नामक संस्था से उ. प्र. के हजारों शिक्षक जुड़े हैं।

टीएससीटी का उदय उस समय हुआ था जिसे कोरोना काल कहा जाता है। हर रोज सैकड़ों की संख्या में लोग तड़प तड़प कर मर रहे थे। उनमें बहुत से शिक्षक भी थे। तब प्रयागराज के शिक्षक विवेकानंद आर्य और उनके करीबी महेंद्र वर्मा, सुधेश पांडे और संजीव रजक ने 26 जुलाई 2020 को टीएससीटी का गठन किया। विवेकानंद बताते हैं कि यह एक ऐसा मंच है जहां शिक्षकों का, शिक्षकों के लिए, शिक्षकों के द्वारा आर्थिक सहयोग किया जाता है। यह ऐसा समूह है, जिसमें जुड़ने वाला बेसिक और माध्यमिक का कोई भी शिक्षक साथी अपने किसी भी शिक्षक साथी के दिवंगत होने पर उसके नॉमिनी के खाते में सीधे 50 रुपए भेजकर आर्थिक मदद करते हैं। टीएससीटी से जुड़ने के लिए उसकी वेबसाइट डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डाट टीएससीटीयूपी डाट काम या गूगल प्ले से उसका एप डाउनलोड कर अपना रजिस्ट्रेशन किया जा सकता हैं। जुड़ने का कोई सदस्यता शुल्क नहीं है। इससे जुड़े हुए किसी भी शिक्षक के निधन की सूचना किसी भी जिले से जब प्रांतीय कार्यालय को प्राप्त होती है तो स्थानीय टीम को भेजकर उस सदस्य की वैधानिकता परखी जाती है। निर्धारित नियमों का पालन सुनिश्चित मिलने पर उसके नामिनी का विवरण लेकर पूरी सूचना का अलर्ट वेबसाइटध्एप और वाट्सएप ग्रुपों के माध्यम से सभी सदस्यों तक पहुंच जाता है। सहयोग के लिए पूर्व निर्धारित दस दिन में पूरे प्रदेश के सदस्य अपने दिवंगत साथी के अकाउंट में किसी भी ऑनलाइन माध्यम जैसे बैंक एप, गूगल पे, फोन पे, पेटीएम से मात्र 50 रुपए भेज कर उसकी रसीद वेबसाइट पर अपलोड करते हैं। इस तरह से बिना किसी भागदौड़ के दिवंगत शिक्षकों के खातों में सीधे सहयोग राशि पहुंच जाती है।

आर्य बताते हैं कि सबसे पहला सहयोग प्रयागराज के शकील अहमद को किया गया था। सदस्य कम होने के कारण उनके परिवार को सात लाख रुपए का ही सहयोग हो पाया था। उन्होंने बताया कि अब तक 115 परिवारों को 25 करोड़ रुपए का सहयोग किया जा चुका है। संस्थापकध्अध्यक्ष विवेकानंद आर्य और प्रांतीय टीम के कुशल निर्देशन में पूरे यूपी के दिवंगत शिक्षकों के बेसहारा हो जाने वाले परिवारों का आर्थिक सहयोग किया जा रहा है।

विवेकानन्द अध्यक्ष

महेन्द्र वर्मा, प्रबंधक

सुधेश पांडे, प्रदेश महामंत्री

संजीव रजक, कोषाध्यक्ष

### एक्सीडेंट क्लेम की भी व्यवस्था

संस्था वर्ष में दो बार जनवरी और जुलाई माह में सदस्यों से मात्र 50 रुपए व्यवस्था शुल्क जमा कराती है। जो कि ऐच्छिक है। सदस्यों को यह शुल्क साल में एक ही बार देना होता है। उन्होंने बताया कि व्यवस्था शुल्क से वेबसाइट, कम्प्यूटर आपरेटर, कार्यालय खर्च के साथ संस्था के अन्य तमाम खर्च पूरे किए जाते हैं। इसी धनराशि में से किसी सदस्य के दुर्घटना ग्रस्त होने पर 25 से 50 हजार रुपए तक के इलाज की व्यवस्था भी की जाती है।

### अब करेंगे कन्यादान

भविष्य की योजना का जिक्र करते हुए विवेकानंद ने बताया कि 26 जुलाई को लखनऊ में टीएससीटी का तीसरा स्थापना दिवस प्रस्तावित है। कार्यक्रम को बहुत भव्य बनाने की तैयारी है। स्थापना दिवस पर कन्यादान योजना की शुरुआत करने का इरादा है। इस योजना में किसी भी सदस्य शिक्षक की बेटी के विवाह में सभी शिक्षक शगुन के तौर पर 11 या 21 रुपए का सहयोग कर एक और बड़ी मिसाल पेश करेंगे।

## हार्टफुलनेस संस्थान और एयरफोर्स फैमिली वेलफेयर एसोसिएशन स्वतंत्रता दिवस पर लगाएगा पौधे, निकालेगा पदयात्रा

लोक पहल

**कानपुर।** हार्टफुलनेस संस्थान के तत्वावधान में एयरफोर्स फैमिली वेलफेयर एसोसिएशन की ओर से 7 एयरफोर्स हॉस्पिटल में सेवा दे रहे भाई–बहनों और लाल कुर्ती गांव के बच्चों के लिए निःशुल्क योग शिविर का शुभारम्भ विधायक सुरेंद्र मैथानी ने किया। एसोसिएशन की अध्यक्ष नेहा दलाल ने बताया कि ये आयोजन आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में किया गया। 45 दिन तक योग शिविर चलता रहेगा। हार्टफुलनेस संस्थान की टीम के ऋषि प्रकाश और शिवांगी द्विवेदी ने योग का अभ्यास कराया। 15 अगस्त को सूर्य नमस्कार, 7.5 किमी. पदयात्रा, 25 किमी. साइकिल यात्रा निकालने की तैयारी है। हार्टफुलनेस फॉरेस्टिंग अभियान को बढ़ावा देने के लिए एयरफोर्स के कैंट एरिया में 1000 पौधे भी रोपे जाएंगे। हार्टफुलनेस संस्थान की जोनल समन्वयक शालिनी श्रीवास्तव ने बताया कि आजादी के 75वें अमृत महोत्सव को एयरफोर्स फैमिली वेलफेयर एसोसिएशन के साथ धूमधाम से मनाने के लिए तैयारी शुरू हो गयी है। जल्द ही ऑनलाइन फॉर्म जारी किया जाएगा। पदयात्रा और साइकिल यात्रा में प्रतिभाग करने के लिए ऑनलाइन आवेदन करने वाले प्रतिभागियों को एक निःशुल्क टी–शर्ट दी जाएगी। इस मौके पर राम निवास सिंह, संजय श्रीवास्तव, भारती सिंह, रंजना सचान, रंजना यादव आदि उपस्थित रहे।

## लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुटी भाजपा

### राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक में तैयार होगा रोडमैप

लोक पहल

**लखनऊ।** 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए सत्तारूढ़ भाजपा ने तैयारियों को अंजाम देना शुरू कर दिया है। पार्टी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की एक बैठक दिल्ली में होने जा रही है। जिसमें लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा के चुनाव प्रचार और प्रबंधन का रोडमैप तय होगा। इसमें दिसंबर तक पार्टी के क्षेत्रवार चुनाव प्रबंधन, चुनाव प्रचार की रणनीति भी तय की जाएगी।

सूत्रों के मुताबिक भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की अध्यक्षता में राष्ट्रीय पदाधिकारियों की सात जुलाई से दिल्ली में बैठक होगी। तीन दिन तक चलने वाली बैठक में दूसरे दलों के प्रमुख नेताओं को भाजपा में शामिल करने, क्षेत्रीय दलों से लोकसभा चुनाव के मद्देनजर गठबंधन करने, विपक्षी क्षेत्रीय दलों के खिलाफ चुनावी रणनीति पर मंथन होगा। भाजपा शासित राज्यों और गैर भाजपा शासित राज्यों के लिए पार्टी की अलग–अलग चुनावी रणनीति भी तय होगी। मूल संगठन के साथ चुनाव को लेकर युवा मोर्चा, महिला मोर्चा, एससी मोर्चा, एसटी मोर्चा, किसान मोर्चा, अल्पसंख्यक मोर्चा, पिछड़ा वर्ग मोर्चा के भी कार्यक्रम तय होंगे।

बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित अन्य नेताओं के क्षेत्रवार प्रवास और रैलियों की योजना भी तय होगी।

## मानकों पर खरे नहीं उतरे नर्सिंग व पैरामेडिकल कॉलेज तो प्रवेश पर लगेगी रोक

लोक पहल

**लखनऊ।** यदि मानकों पर खरे नहीं उतरे तो उत्तर प्रदेश के निजी नर्सिंग व पैरामेडिकल कॉलेजों में प्रवेश पर रोक लगाई जा सकती है। सरकार को तमाम शिकायतें मिल रही हैं कि प्रदेश के निजी नर्सिंग व पैरामेडिकल कालेज सरकार व नर्सिंग काउंसिल द्वारा बनाये गये मानकों पर खरे नहीं उतर रहे है। अब सरकार ने इन कालेजों की मान्यता की जांच कराये जाने का फैसला किया है। इन कॉलेजों की जुलाई के प्रथम सप्ताह से पांच अगस्त के बीच केंद्रीय टीम स्थलीय सत्यापन करेगी। इसमें कॉलेज की व्यवस्था मानक के अनुसार न मिलने पर मान्यता रद्द की जा सकती है। संबंधित

कॉलेज में दाखिला लेने पर रोक लगाई जा सकती है।

प्रदेश में करीब 11 सौ से ज्यादा निजी नर्सिंग व पैरामेडिकल कॉलेज हैं। इन कॉलेजों के पाठ्यक्रमों की एनओसी के लिए प्रशिक्षण केंद्रों का स्थलीय निरीक्षण होता है। इसमें इंडियन नर्सिंग काउंसिल और उत्तर प्रदेश स्टेट मेडिकल फैकल्टी की ओर से निर्धारित मानक नहीं पाए जाने पर दाखिले की अनुमति नहीं दी जाती है। कई बार शिकायतें मिलती हैं कि टीम के मौके पर जाने पर कॉलेज प्रबंधन निरीक्षण नहीं कराता है।

ऐसे में उत्तर प्रदेश मेडिकल फैकल्टी के सचिव डॉ.आलोक कुमार ने सभी कॉलेजों के प्रधानाचार्य व प्रबंधकों को निर्देश दिया है कि छह जुलाई से पांच अगस्त के बीच स्थलीय सत्यापन करने जाने वाली टीम को सहयोग करें। यदि संबंधित कॉलेज ने निरीक्षण नहीं कराया तो कॉलेज के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। दाखिले की मान्यता न मिलने पर सारी जिम्मेदारी संबंधित संस्थान की होगी।

## विद्यार्थियों को झटका: निजी तकनीकी कालेजों में बढ़ेगी फीस

लोक पहल

**कानपुर।** तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर अपने भविष्य को सुधारने का सपना देखने वाले छात्रों को बड़ा झटका लगा है। अगर सरकारी कालेज में प्रवेश नहीं मिला तो उन्हें बड़ी रकम खर्च करके डिग्री या डिप्लोमा हासिल करना पड़ेगा। सरकार ने निजी तकनीकी संस्थानों से डिग्री और डिप्लोमा कर रहे छात्रों को इस बार ज्यादा फीस चुकाने का प्रस्ताव तैयार किया है। प्रदेश भर के निजी संस्थानों में शुल्क निर्धारण करने वाली प्रवेश और फीस नियमन समिति ने फीस में दस फीसदी तक वृद्धि का प्रस्ताव तैयार किया है। कोर्सों के मुताबिक फीस तय कर ली गई है। हालांकि, इस संबंध में घोषणा अभी नहीं हुई है। इससे करीब चार लाख छात्रों को ज्यादा शुल्क देना होगा। वहीं, सरकारी संस्थाओं में डिप्लोमा कर रहे दो लाख छात्रों की फीस में कोई बदलाव नहीं किया जा रहा है। फीस नियमन समिति की नई सूची के मुताबिक, इस बार निजी पॉलिटेक्निकों से इंजीनियरिंग डिप्लोमा करने के लिए छात्रों

को प्रति वर्ष 33600 रुपये फीस देनी पड़ेगी। अभी इसके लिए उन्हें 30150 रुपये फीस जमा करनी पड़ती है। तीन साल के डिप्लोमा के लिए 3450 रुपये प्रति वर्ष के हिसाब से 10350 रुपये और ज्यादा चुकाने पड़ेंगे। इसी तीन साल के डिप्लोमा के लिए सरकारी पॉलिटेक्निकों के छात्रों को प्रति वर्ष केवल 12670 रुपये के हिसाब से 38010 रुपये चुकाने पड़ते हैं।

प्राविधिक शिक्षा विभाग के अंतर्गत प्रदेश में 149 सरकारी पॉलिटेक्निक, 19 सहायता प्राप्त और 1266 निजी संस्थान हैं। इनमें कुल 2,35,464 सीटें हैं। सरकारी संस्थाओं में 59,028 और निजी में 1,76,434 सीटें हैं। निजी क्षेत्र के इंजीनियरिंग कॉलेजों से बीटेक करने के इच्छुक छात्रों को इस बार 61,200 रुपये सालाना फीस चुकानी पड़ेगी। बीफार्मा के लिए 70,500 व बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर के लिए 64300 रुपये शुल्क देना होगा।

डीफार्मा और डिप्लोमा इन आर्किटेक्चर के लिए सालाना क्रमशरू 50,100 और 33700 रुपये जमा करने होंगे। डिप्लोमा ऑफ होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलॉजी की फीस 34,800 हो जाएगी। डीफार्मा को छोड़कर दो वर्षीय व एक वर्षीय सभी पाठ्यक्रमों का शुल्क 25000 रुपये रहेगा। वहीं, सहायता प्राप्त डिप्लोमा स्तरीय तकनीकी संस्थानों में चल रहे पाठ्यक्रमों की फीस 19000 रुपये होगी। एमबीए के लिए 66,500 व एमसीए के लिए 61,200 रुपये फीस निर्धारित की गई है। एम फार्मा के लिए 76,500 और मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर के लिए 64 हजार रुपये जमा करने होंगे। सरकारी पॉलिटेक्निकों में इस बार फीस नहीं बढ़ाई जाएगी। छात्रों को प्रतिवर्ष 12670 रुपये ही फीस जमा करनी होगी।

## अब सरकारी अस्पतालों में इंटर्नशिप नहीं करेंगे एमबीबीएस के छात्र

लोक पहल

**लखनऊ।** अभी तक एमबीबीएस करने के बाद सरकारी अस्पतालों में इंटर्नशिप करने वाले छात्रों को बड़ा झटका लगा है। अब निजी मेडिकल कालेजों या विदेशों से एमबीबीएस की पढ़ाई करने वाले छात्रों की अपने कालेज में ही इंटर्नशिप करनी होगी। एमबीबीएस करने के बाद अब छात्र एक साल की इंटर्नशिप सरकारी अस्पतालों में नहीं कर पाएंगे। नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने इस पर रोक लगा दी है। नए आदेश के तहत जिस कॉलेज से छात्र ने एमबीबीएस किया है। वहीं से इंटर्नशिप भी करनी होगी। अस्पतालों में इंटर्नशिप के लिए आने वाले छात्रों को वापस लौटाया जा रहा है। एमबीबीएस के बाद छात्रों को एक साल की इंटर्नशिप करना जरूरी है। ऐसे में छात्र अपने कॉलेज के बजाय सरकारी अस्पतालों में इंटर्नशिप करने आते थे। इसमें रूस, यूक्रेन से एमबीबीएस करने वालों समेत अन्य निजी मेडिकल कॉलेज के छात्र भी शामिल थे।

# मुमुक्षु शिक्षा संकुल बीज से वट वृक्ष की ओर बढ़ते कदम

लोक पहल

करीब आठ दशक पूर्व स्वामी शुकदेवानन्द सरस्वती जी ने शिक्षा का जो बीज रोपा था वह आज एक वटवृक्ष बन चुका है। एक ही प्रांगण में केजी से लेकर पीजी तक की शिक्षा देने के साथ ही मुमुक्षु शिक्षा संकुल उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक और नया कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में प्रयासरत है। पौराणिक पुण्य नदी देवहूति के पवित्र जल से प्रक्षालित तीर्थभूमि को स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज ने, तब अपने चरणों से पवित्र किया जब वे अपने पूज्य गुरूदेव स्वामी एकरसानन्द सरस्वती जी महाराज के साथ सर्वप्रथम 1931 में शाहजहाँपुर आकर तिकुनियाबाग में ठहरे थे। वर्तमान में इसी स्थान पर मुमुक्षु आश्रम का विशाल प्रांगण स्थित है। इसके बाद वे पुनः फरुर्खाबाद चले गए । सन् 1936 में एक बार पुनः शाहजहाँपुर पधारे और फिर वे यही आश्रम में रहने लगे। जिस समय वे यहाँ आये उस समय तिकुनियाबाग की जमीन हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिक झगड़े में पड़ी हुयी थी। यह महाराज श्री का प्रताप था कि वे इस झगड़े को शान्त करने में सफल रहे। दैवी सम्पद् मण्डल के महामण्डलेश्वर रहे ब्रह्मलीन स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज ने आध्यात्मिक के साथ शिक्षा के प्रसार के लिए विद्यालयों की स्थापना का संकल्प लिया। उन्होंने सबसे पहले दैवी संपद ब्रह्मचर्य संस्कृत विद्यालय की स्थापना का महती कार्य उस समय पर किया जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश में भारत छोड़ो आन्दोलन चल रहा था। यह सुखद संयोग है या स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज की दूरदृष्टि, जिसने उन्हें राजनीतिक आंदोलनों के बीच शैक्षिक आंदोलन के पुरोधा पुरुष के रूप में शाहजहाँपुर में स्थापित किया। वे अच्छे से जानते थे कि राजनीतिक स्वतंत्रता, शैक्षिक ज्ञान के बिना अधूरी है इसलिए उन्होंने शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिया। 08 अगस्त सन् 1942 को ही शुकदेवानन्द जी महाराज ने वैदिक शिक्षा प्रचार और प्रसार के लिये संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की मुमुक्षु आश्रम में की। श्री दैवी सम्पद् ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय के नाम से सुप्रसिद्ध इस महाविद्यालय में आज आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है। भारत के तत्कालीन गृहमंत्री रहे गुलजारी लाल नंदा जो स्वामी जी से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने तत्कालीन उ.प्र. सरकार के मुख्यमंत्री पं. गोविन्दबल्लभ पंत से कहकर आश्रम के पास की जमीन शाहजहाँपुर के शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए स्वामी जी को उपलब्ध करायी। महाविद्यालय की प्रगति से प्रभावित

होकर स्थानीय जनता के आग्रह पर स्वामी जी ने सन् 1942–43 में श्री दैवी सम्पद् इण्टर कालेज की स्थापना की। मुमुक्षु शिक्षा संकुल के वर्तमान मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती जी महाराज के आशीर्वाद से, आज माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध, इस इंटर कॉलेज का एक सुसज्जित भव्य भवन है। इसके बाद उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय की स्थानीय आवश्यकता को देखते हुए स्वामी शुकदेवानन्द जी ने बच्चों को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दृष्टि से 08 मार्च सन् 1964 को स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय की आधारशिला रखी। शिलान्यास के अवसर पर देश के तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा ने भवन का शिलान्यास किया। आज वही बीज एक वटवृक्ष बनकर एस.एस. पीजी कालेज के रूप में विकसित हुआ है। 06 मार्च सन् 1965 को जब स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज का शरीर पूर्ण हुआ तो मुमुक्षु आश्रम के संचालन का गुरुतर दायित्व स्वामी जी के शिष्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी को मिला जो बाद में अपने गुरू भाई स्वामी सदानन्द जी को यह दायित्व देकर स्वयं हरिद्वार चले गये। स्वामी सदानन्द जी के संरक्षण में मुमुक्षु आश्रम और शैक्षणिक संस्थाओं ने बहुत प्रगति की। इसके साथ ही मुमुक्षु आश्रम से मासिक पत्रिका परमार्थ का प्रकाशन भी किया जाता रहा। इस तरह आश्रम का विस्तार होता गया। यद्यपि इस बीच अध्यापकों और प्रबन्धतंत्र के बीच उत्पन्न कलह से पीड़ित होकर स्वामी सदानन्द जी भी ऋषिकेश चले गये। जिससे शैक्षिक परिसर के विकास का क्रम अचानक ठहर सा गया। इसके बाद एक लम्बे समय तक आश्रम और शैक्षिक परिसरों की प्रगति प्रभावित रही। बीच में स्वामी सदानन्द जी के योग्य शिष्य स्वामी शाश्वतानन्द सरस्वती ने भी कार्यभार संभाला तो उन्हें भी विवादों का सामना करना पड़ा। इसी बीच उनका भी अवसान हो गया। सन् 1989 में मुमुक्षु आश्रम में वर्तमान मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने अपनी मेधा और कुशल नेतृत्व क्षमता से विवादों का समापन कर लिया। महाराज श्री के आगमन से मुमुक्षु शिक्षा संकुल को प्रगति के नवीन पंख मिल गये। जनपद में उस समय सीबीएससी से सम्बद्ध कोई भी विद्यालय नहीं था जिसके कारण यहाँ लोगों को स्तरीय शिक्षा का लाभ नहीं मिल पा रहा था, तभी कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य जगतगुरू जयेन्द्र सरस्वती जी का आगमन हुआ। उनकी प्रेरणा से स्वामी चिन्मयानन्द ने 25 फरवरी 1989 को श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ की स्थापना की। आज इस विद्यालय का शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान है। 25 फरवरी 2003 को जब मुमुक्षु शिक्षा संकुल के वार्षिक समारोह में उ.प्र. के तत्कालीन यशस्वी राज्यपाल माननीय विष्णुकान्त शास्त्री पधारे तो कुछ स्थानीय अधिवक्ताओं के विधि महाविद्यालय की स्थापना के अनुरोध को महामहिम ने तत्काल स्वीकृति प्रदान की और स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज की प्रेरणा और आशीषों से वर्ष 2003 में विधि त्रिवर्षीय व 2007 में विधि पंचवर्षीय का पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय की स्थापना हुयी। आज महाविद्यालय का एक बहुत ही भव्य और सुसज्जित भवन है। वहीं स्वामी शुकदेवानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय के साथ मुमुक्षु शिक्षा संकुल की सभी पॉच शैक्षिक संस्थाओं के बहुमंजली भव्य परिसर है। जहाँ विश्व स्तरीय शैक्षिक सुविधायें उपलब्ध है। समय–समय पर संकुल में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुविध पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन भी किया जाता रहा है। अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय के विभिनन विभागों द्वारा विभिन्न प्रोजेक्ट और शोध कार्य कराये जाते है। महाविद्यालय से मुमुक्षु जर्नल ऑफ ह्यूमिनिटीज नामक शोध पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है। वहीं दार्शनिक डॉ0 राधाकृष्णनन और श्रीमती इंदिरा गांधी के विचारों पर अध्ययन और अनुसंधान के लिये यूजीसी द्वारा शोधपीठों की स्थापना की गयी है। समय–समय पर स्वनामधन्य अतिथि मुमुक्षु शिक्षा संकुल में पधार कर अपना आशीर्वाद विद्यार्थियों को देते रहे हैं। उनमें प्रमुख रूप से राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद, सर्वपल्ली राधाकृष्णनन, लोक सभा अध्यक्ष जीवी मावलंकर, अनन्त शयनम आयंगर, बलराम जाखड़, गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा व लालकृष्ण आडवाणी, राज्यपाल महामहिम विश्वनाथदास, सूरजभान, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री मुख्यमंत्री कल्याण सिंह, रामप्रकाश गुप्त व वर्तमान के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आगमन महाविद्यालय में हो चुका है। भाजपा के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष और गृहमंत्री राजनाथ सिंह, डा. मुरली मनोहर जोशी, पर्यावरण विद् सुन्दरलाल बहुगुणा, सुप्रसिद्ध इतिहासकार प्रो.ईश्वरी प्रसाद पद्मविभूषण प्रो. कीर्ति सिंह, पद्मश्री प्रो. लाल जी सिंह व एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक प्रो. जे.एस. राजपूत आदि प्रमुख है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री और मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती के आशीषों की सघन छाया तले मुमुक्षु शिक्षा संकुल विकास के नित नवीन आयाम छू रहा है। आज मुमुक्षु शिक्षा संकुल में केजी से लेकर पीजी तक की शिक्षा एक ही परिसर में उपलब्ध है। वर्तमान में मुमुक्षु शिक्षा संकुल कुछ ऐसे परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है जो आने वाले समय में शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में काफी लाभदायी सिद्ध होंगे। स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज ने शिक्षा का जो बीज बोया था आज वह स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती जी महाराज के संरक्षण में विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है, जिसकी छाया तले ज्ञान प्राप्त करने बहुत से बटुक आते हैं।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहाँपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहाँपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहाँपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहाँपुर होगा।